GOVERNMENT DEGREE COLLEGE FOR WOMEN, NALGONDA

DEPARTMENT OF HINDI

STUDENT PROJECT FOR 2016-17

TOPIC

KAARAK PRAYOG

S.NO	NAME OF THE STUDENT	ROLL NO	GROUP&YEAR
1	KATTA PRAVANYA	16044012111521	BA I YEAR
2	KAPPE GEETHA	16044012441019	MPC I YEAR
3	AFREEN ANJUM	16044012445001	BZC I YEAR
4	AMATHUN ARSHIYA	16044012445002	BZC I YEAR
5	MUNAZZA MARIYAM	16044012445025	BZC I YEAR

कारक (case) :-

हिन्दी में आठ कारक होते है। उन्हें विभक्ति चिन्हों सहित नीचे देखा जा सकता है।

कारक - विभक्ति चिन्ह

* कर्ता - ने
* कर्म - को
* करण - से के साथ, के द्वारा
* संप्रदान - के लिए, को
* अपादान - से
* संबंध - का, के, की
* अधिकरण - मे, पर
* संबोधन - हे !, ओ !, अरे !

कारक चिन्ह स्मरण करने के लिए इस पद की रचना की गई हैं।

कर्ता ने अरु, कर्म को, करण रीति से जान।
संप्रदान को, के लिए, अपादान से मान॥
का, के, की, संबंध हैं, अधिकरणादिक में मान।
रे, हे! हो! संबोधन मित्र धरहु यह ध्यान॥

विशेष :- कर्ता से अधिकरण तक विभक्ति चिन्ह [परसर्ग] शब्दों के अंत में लगाए जाते हैं, किन्तु संबोधन कारक के चिह्न - हे, रे, आदि प्रायः शब्द से पूर्व लगाए जाते हैं।

1. कर्ता कारक [Nominative]

जिस रूप से क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध होता है। वह "कर्ता" कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न "ने" है। इस 'ने' चिह्न का वर्तमानकाल और भविष्यकाल में प्रयोग नहीं होता है। इसका सकर्मक धातुओं के साथ भूतकाल में प्रयोग होता है। जैसे -

* राम ने रावण को मारा।

कर्ता कारक

* रोहन ने कहानी पढ़ी।
  कर्ता कारक

पहले वाक्य में क्रिया का कर्ता राम है। इसमें "ने" कर्ता कारक का विभक्ति-चिह्न है। इस वाक्य में 'मारा' भूतकाल की क्रिया है। 'ने' का प्रयोग प्रायः भूतकाल में होता है। दूसरे वाक्य में वर्तमानकाल की क्रिया का कर्ता लड़की है। इसमें 'ने' विभक्ति का प्रयोग नहीं हुआ है।

विशेष :-

भूतकाल में अकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ भी ने परसर्ग [विभक्ति चिह्न] नहीं लगता है। जैसे - वह हँसा।

वर्तमानकाल व भविष्यकाल की सकर्मक क्रिया के

कर्ता के साथ ने परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है।
जैसे - वह फल खाता है। वह फल खाएगा।

* कर्म - वह फल

कर्म - कर्म कर्ता के साथ 'को' तथा 'से' का प्रयोग भी किया जाता है। जैसे -

बालक को सो जाना चाहिए।
सीता से पुस्तक पढ़ी गई।
रेलगाड़ी से चला भी नहीं जाता।
इससे शब्द लिखा नहीं गया।

2. कर्म कारक [objective]

क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है। वह कर्म कारक कहलाता है। इसका विभक्ति - चिह्न "को" है। यह चिह्न भी बहुत से स्थानों पर नहीं लगता। जैसे -

* लड़की ने पत्र लिखा।
कर्म कारक

* सीता ने पाठ पढ़ा।
कर्म कारक

पहले वाक्य में 'मारने की क्रिया का फल साँप [को मारा] पर पड़ा है। अतः साँप कर्म कारक है। इसके साथ परसर्ग 'को' लगा है। दूसरे वाक्य में 'लिखने' की क्रिया का फल पत्र पर पड़ा। अतः पत्र कर्म कारक है। इसमें कर्म कारक का विभक्ति चिह्न 'को' नहीं लगा।

3. करण कारक [Instrumental]

संज्ञा आदि शब्दों के जिस रूप से क्रिया के करने के साधन का बोध हो अर्थात् जिसकी सहायता से कार्य संपन्न हो वह करण कारक

कहलाता है। इसके विभक्ति-चिह्न 'से' के 'द्वारा' है। जैसे -

* बालक गेंद से खेल रहे हैं।
करण कारक

वाक्य में कर्ता बालक खेलने का कार्य 'गेंद से' कर रहे हैं। अतः 'गेंद से' करण कारक है।

* बच्चा से पानी पीता है।
करण कारक

4. संप्रदान कारक [Dative]

संप्रदान का अर्थ है - देना । अर्थात कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है, अथवा जिसे कुछ देता है उस व्यक्त करने वाले रूप को संप्रदान कारक कहते हैं । इसके विभक्ति चिन्ह "के लिए" को हैं ।

* गरीबो के लिए खाना दो ।

संप्रदान कारक

5. अपादान कारक [Ablative]

संज्ञा के जिस रूपसे एक वस्तु का दूसरी से अलग होना पाया जाए अपादान कारक कहलाता है। इसका विभक्ति - चिह्न 'से' है। जैसे -

पेड़ से फल गिरा।

अपादान कारक

6. संबंध कारक [Genitive]

शब्द के जिस रूप से किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध प्रकट हो वह संबंध कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'को', 'के', 'की', 'रे', 'रि' है। जैसे –

* सेना के जवान आ रहे है।
  संबंध कारक

7. अधिकरण कारक [locative] :=

शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति-चिह्न 'में', 'पर' हैं। जैसे -

पक्षी

* पुस्तक पेड़ पर है।

अधिकरण कारक

* हरी घर में है।

अधिकरण कारक

8. संबोधन कारक :-

जिससे किसी को बुलाने अथवा सचेत करते का भाव प्रकट हो उसे संबोधन कारक कहते है और संबोधन चिह्न (!) लगाया जाता है। जैसे-

हे ईश्वर ! रक्षा करो.

संबोधन कारक

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE FOR WOMEN, NALGONDA

DEPARTMENT OF HINDI

STUDENT PROJECT FOR 2016-17

TOPIC

MAHADEVI VARMA KA RACHNA SANSAAR

S.NO	NAME OF THE STUDENT	ROLL NO	GROUP&YEAR
1	SK SHAHNAAZ FATIMA	401215458020	MBC II YEAR
2	ANEES FATIMA	401215405014	BCOM II YEAR
3	MD SAMREEN SULTANA	401215405059	BCOM II YEAR
4	P ANANTHALAKSHMI	401215405011	BCOM II YEAR
5	V KAVYASREE	401215405041	BCOM II YEAR

महादेवी वर्मा रचना संसार

परियोजना कार्य

16 - 17 II yr.

Submitted By

Shaik. Shahnaaz MBBC - 401215458020

Anees Fathima BCom - 401215405014

Samreen Sulthana BCom - 401215405059

P. Aranthalakshmi - 401215405011

V. Kavyasri BCom - 401215405043

: महादेवी वर्मा :

जन्म : 26 मार्च 1907

मरण : 11 सितंबर 1987

महादेवी वर्मा :

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 में फर्रुखाबाद में हुआ। हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से थीं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा है। महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके सामाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

उन्होंने "खड़ी बोली" हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल "बृजभाषा" में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल "संस्कृत और बंगाल" के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक के वे "प्रयाग महिला विद्यापीठ" की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परन्तु उन्होंने अविवाहित की भांति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं।

उन्हें हिंदी साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भांति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। वर्ष 2007 उनका जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया था। गूगल ने इस दिवस की याद में वर्ष 2018 में गूगल डूडल के माध्यम से मनाया।

शिक्षा :

महादेवी जी की शिक्षा "इन्दौर" में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह जैसी बाधा पड़ जाने के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में "क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद" में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कालेज में "सुभद्रा कुमारी चौहान" के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी का हाथ पकड़ कर सखियों के बीच में ले जाती और कहतीं - "सुनो, ये कविता भी लिखती हैं"। 1932 में जब उन्होंने "इलाहाबाद विश्वविद्यालय" से "संस्कृत" में एम ए पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह "नीहार" तथा "रश्मि" प्रकाशित हो चुके थे।

जीवनी :

महादेवी वर्मा के परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः बाबा बाबू बाँके विहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी - महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा "भागलपुर" के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम "हेमरानी देवी" था। हेमरानी देवी बड़ी धर्म परायण, कर्मनिष्ठा, भावुक एवं शाकाहारी महिला थीं। विवाह के समय अपने साथ सिंहासनासीन भगवान की मूर्ति भी लायी थीं। वे प्रतिदिन कई घंटे पूजा-पाठ तथा "रामायण, गीता" एवं "विनय पत्रिका" का पारायण करती थीं। और "संगीत" में भी उनकी अत्यधिक रुचि थी। इसकी बिल्कुल विपरीत उनके पिता गोविन्द प्रसाद वर्मा सुन्दर, विद्वान, संगीत प्रेमी, नास्तिक, शिकार करने एवं घूमने के शौकीन, माँसाहारी तथा हँसमुख प्रकृति के थे। महादेवी वर्मा के मानस बंधुओं में सुमित्रानंदन पन्त एवं निराला का नाम लिया जा सकता है, जो उनसे जीवन पर्यन्त राखी बँधवाते रहे। निराला जी से उनकी अत्यधिक निकटता थी, उनकी पुष्प कलाइयों में महादेवी जी लगभग चालीस वर्षों तक राखी बाँधती रहीं।

वैवाहिक जीवन :

सन् 1916 में उनके बाबा श्री बाँके बिहारी ने इनका विवाह बरेली के पास नबाब गंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। श्री वर्मा इण्टर करके लखनऊ मेडिकल कॉलेज में बोर्डिंग हाउस में रहने लगे। महादेवी जी उस समय क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद के छात्रावास में थीं। श्रीमती महादेवी वर्मा को वैवाहिक जीवन से विरक्ति थी। कारण कुछ भी रहा हो पर श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं थी। सामान्य स्त्री-पुरुष के रूप में उनके सम्बन्ध मधुर ही रहे। दोनों में कभी-कभी पत्राचार भी होता था। यदा-कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे। श्री वर्मा ने महादेवी जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया। महादेवी जी का जीवन तो एक संन्यासिनी का जीवन था। उन्होंने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहना, तख्त पर सोई और कभी शीशा नहीं देखा। सन् 1966 में पति की मृत्यु के बाद के वे स्थायी रूप से इलाहाबाद में रहने लगीं।

प्रमुख कृतियाँ:

महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ विशिष्ट गद्यकार भी थीं। उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं।

कविता संग्रह:

1. निहार
2. रश्मि
3. नीरजा
4. सांध्यगीत
5. दीपशिखा
6. सप्तपर्णा
7. प्रथम आयाम
8. अग्निरेखा

श्रीमती महादेवी वर्मा के अन्य अनेक काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं, जिनमें उपर्युक्त रचनाओं में से चुने हुए गीत संकलित किये गये हैं, जैसे "आत्मिका, परिक्रमा, सन्धिनी, यामा, गीतपर्व, दीपगीत, स्मारिका, नीलांबरी" और "आधुनिक कवि महादेवी" आदी।

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य:

* रेखाचित्र: अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ.
* संस्मरण: पथ के साथी और मेरा परिवार और संस्मरण.
* चुने हुए भाषणों का संकलन: संभाषण
* निबंध: शृंखला की कड़ियाँ, विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, संकलिता.
* ललित निबंध: क्षणदा
* कहानियाँ: गिल्लू
* संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह:

हिमालय, चाँद, साहित्यकार, साहित्यकार संसद और रंगवाणी नाट्य संस्था की भी स्थापना की।

पुरस्कार व सम्मान :

उन्हें प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत सभी संस्थाओं से पुरस्कार व सम्मान मिले।

1943 में उन्हें "मंगलाप्रसाद पारितोषिक" एवं "भारत भारती" पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिए 'पद्म भूषण' की उपाधि दी।

1971 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की "पद्म विभूषण" उपाधि से सम्मानित किया गया।

सन् 1969 में "विक्रम विश्वविद्यालय", 1977 में "कुमांऊ विश्वविद्यालय", "नैनीताल", 1980 में "दिल्ली विश्वविद्यालय" तथा 1984 में "बनारस हिंदू विश्वविद्यालय," "वाराणसी" ने उन्हें "डी. लिट' की उपाधि से सम्मानित किया।

16 सितंबर 1991 को भारत सरकार के डाकतार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ उनके सम्मान में 2 रुपये का एक युगल टिकट भी जारी किया है।

रेखाचित्र :

1. अतीत के चलचित्र और 2. स्मृति की रेखाएं (1943) 3. शृंखला की कड़ियाँ 4 मेरा परिवार.

संस्मरण :

1. पथ के साथी (1956)
2. मेरा परिवार (1972)
3. स्मृतिचित्र (1973)
4. संस्मरण (2003)

निबंध संग्रह :

1. शृंखला की कड़ियाँ (1942)
2. विवेचनात्मक गद्य (1942)
3. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962)
4. संकलिता (1969)
5. भारतीय संस्कृति के स्वर

कहानी संग्रह :

गिल्लू और अन्य कहानियाँ चंडीगढ़

भाषण संग्रह :

संभाषण (1974)

कविता संग्रह :

* ठाकुरजी भोले हैं
* आज खरीदेंगे हम ज्वाला

महादेवी वर्मा का देहांत 11 सितंबर 1987 में हुआ।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE FOR WOMEN, NALGONDA

DEPARTMENT OF HINDI

STUDENT PROJECT FOR 2017-18

TOPIC
CHHAYA VAD KE CHAAR

S.NO	NAME OF THE STUDENT	ROLL NO	GROUP&YEAR
1	ISHRATH BEGUM	17044012445014	BZC I YEAR
2	FARAH SULTANA	17044012458008	MBC I YEAR
3	FARHEEN	17044012458009	MBC I YEAR
4	A MAHESHWARI	17044012129002	BA I YEAR
5	JUVERIA GULNAAZ	17044012445017	BZC I YEAR

Study Project - 2017-18

छायावाद के चार स्तम्भो का परिचय और उनकी "रचनाएँ"।

Submitted By: I[st] year students

Ishrat Begum - BZC - 17044124445014
Farha Sultana - MBBC - 17044012458008
Farheen - " - 17044012458009
Ale Maheshwari - B.A - 17044012129002
Juveriya Gulnaaz - BZC - 17044012445017

छायावाद

प्रस्तावन :

छायावाद का उद्भव और विकास :-

छायावाद हिन्दी साहित्य में एक नवीन दृष्टिकोण लेकर आया है। इसने सौ वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद अपना एक रूप बनाया है, इसको जनता तक पहुँचने में बहुत समय लगा है। आलोचकों ने नये-नये मापदंडों के द्वारा पाठकों को समझाया है। इनमें आचार्य नंददुलारे वाजपेयी अग्रगण्य हैं।

छायावाद क्या है?

द्विवेदी युग के पश्चात हिंदी साहित्य में जो कविता-धारा प्रवाहित हुई, वह छायावादी कविता के नाम से सिद्ध हुई। छायावाद की कालावधि सन् 1917 से 1936 तक मानी गई है।

वस्तुत: इस कालावधि में छायावाद इतनी प्रमुख प्रवृत्ति रही है कि सभी कवि इससे प्रभावित हुए और इसके नाम पर ही इस युग को छायावादी युग कहा जाने लगा।

छायावाद के स्वरूप को समझने के लिए उस पृष्ठभूमि को समझ लेना आवश्यक है। जिसके उसे जन्म दिया। साहित्य के क्षेत्र में।

नाथ: एक नियम देखा जाता है कि पूर्ववर्ती युग के अभावों को दूर करने के लिए परवर्ती युग का जन्म

समालोचकों में एकमत नहीं हो सका। विभिन्न विद्वानों ने छायावाद की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ की हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने छायावाद को स्पष्ट करते हुए लिखा है - "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहां उसका संबंध काव्य-वस्तु से होता है अर्थात् जहां कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजन करता है। छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या प्रविद्ध पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में है।

छायावाद एक शैली विशेष है, जो लाक्षणिक प्रयोगों, अप्रस्तुत विधानों और अमूर्त उपमानों को लेकर चलती है। "दूसरे अर्थ में उन्होंने छायावाद को चित्र-भाषा-शैली कहा है।

महादेवी वर्मा ने छायावाद का मूल सर्वात्मवाद दर्शन में माना है। उन्होंने लिखा है कि "छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का नहीं है, जो मूर्त और अमूर्त विश्व को मिलाकर पूर्णता पाता है। -- अन्यत्र वे लिखती हैं कि छायावाद प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीथ है।

डॉ. राम कुमार वर्मा ने छायावाद और रहस्यवाद में कोई अंतर नहीं माना है। छायावाद के विषय में उनके शब्द हैं - "आत्मा और परमात्मा का गुप्त वाग्विलास रहस्यवाद है और वही छायावाद है। एक स्थल पर वे लिखते हैं - "छायावाद या रहस्यवाद जीवात्मा की उस अंतर्निहित प्रवृत्ति का प्रकाशन है, जिसमें वह दिव्य और अलौकिक सत्ता से अपना शांत और नित्य संबंध जोड़ना चाहती है और यह संबंध इतना बढ़ जाता है कि दोनों में कुछ अंतर नहीं रह जाता है। परमात्मा की छाया आत्मा पर पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा पर। यही छायावाद है।"

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का मंतव्य है - "मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु सशक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्व-सर्वमान्य आत्मा हो सकती है। छायावाद की एक मान्य अभिघात विशेषता दो रूपों में दिख पड़ती है। एक सूक्ष्म और काल्पनिक अनुभूति के प्रकाश में और दूसरी लाक्षणिक और प्रतीकात्मक शब्दों के प्रयोग में। और इस आधार पर तो यह कहा ही जा सकता है कि छायावाद अधुनिक हिंदी - कविता की वह शैली है जिसमें सूक्ष्म और काल्पनिक सहानुभूति को लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक ढंग पर प्रकाशित करते हैं।

इसमें परोक्ष की अनुभूति समरसता तथा प्राकृतिक सौंदर्य के द्वारा "अहम" का "इदम" से समन्वय करने का सुंदर प्रयत्न पाया जाता हैं।

8) सांस्कृतिक चेतना :- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी का कहना है कि छायावाद में एक नूतन सांस्कृतिक चेतना का उद्भास है और एक स्वतंत्र दर्शन की आयोजना भी।

9) इस कविता में आत्माभिव्यक्ति अधिक होती है।

10) आचार्य रामचंद्रशुकल ने इसको "कामवृत्तियों" का प्रच्छन्न पोषण" कहा हैं।

11) इसमें शब्द :- माधुर्य को प्रधानता दी जाती है इसकी शैली की विशेषता शब्दों के लाक्षणिक प्रयो में है। इसके अलावा अप्रस्तुत योजना, बिंबविधा प्रतीकों का प्रयोग और चित्रात्मकता अन्य गुण है इसमें गेय रचना की बहुलता है। यह कल्पना, कल औ अभिव्यंजना की दृष्टि से अद्वितीय है। प्रसाद पंत, निराला और महादेवी इसमें प्रसिद्ध हैं।

छायावाद की परिभाषा :-

छायावाद अपने युग की अत्यंत व्यापक प्रवृ रही है। फिर भी यह देख कर आश्चर्य होता है कि उसकी परिभाषा के संबध में विचारकों और

3) समन्वय :- यह बाह्य जगत् और भाव-जगत् में समन्वय करता है। छायावादी कवि के लिए गुलाब का फूल यौवन का प्रतीक होता है। झरना उसको मीठी तान सुनाती है। जुही की कली में वह सुहागिन नारी को देखता है। यमुना की लहरें उस के लिए अतीत वैभव का गाना करती हैं।

4) प्रकृति-प्रेम :- छायावादी कवि प्रकृति में जीवन की कल्पना करते हैं। उसकी विभूतियों में तन्मय रहते हैं। उसका चित्रण स्वतंत्र रूप से और नायक-नायिका के साथ भी करते हैं।

5) सौंदर्योपासना :- ये कवि वैचित्र्य और सौंदर्य के उपासक हैं। प्रकृति व नारी की सुंदरता उनके के लिए अनुभव का नहीं बल्कि आराधना का विषय हैं।

6) अमलिन श्रृंगार :- छायावादि कविता में अतिनैतिकता एवं शुष्कता का विरोध करता है। किन्तु रीतिकालीन वासनामय श्रृंगार के प्रति भी इसमें विद्रोह की भावना है। किन्तु रीतिकालीन वासनामय श्रृंगार के प्रति भी इसमें विद्रोह की भावना है। यह अमलिन श्रृंगार के सुंदर और प्रभावशाली चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।

7) दार्शनिकता :- कविवर जयशंकर प्रसाद छायावाद को अद्वैत रहस्यवाद का स्वाभाविक विकास मानते हैं।

छायावाद विशेष रूप से हिंदी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्य-धारा है जो लगभग ई.स 1917 से 1936 तक की प्रमुख युगवाणी रही। 1) इसमें जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंद पंत, महादेवी वर्मा, आदि मुख्य कवि हुए। यह सामान्य रूप से भावोच्छवास प्रेरित स्वच्छन्द कल्पना-वैभव की वह स्वच्छन्द प्रवृत्ति है जो देश-कालगत वैशिष्ट्य के साथ संसार की सभी जातियों के विभिन्न अभ्यानशील युगों की आशा, आकांक्षा में निरंतर व्यक्त होती रही है। स्वच्छन्दता की इस सामान्य भावधारा की विशेष अभिव्यक्ति का नाम हिंदी साहित्य में छायावाद पड़ा। छायावाद नामकरण का श्रेय मुकुरधर पाण्डेय को जाता है।

2) इसके आधार पर हिंदी साहित्य में छायावादी युग और छायावादी आंदोलन को भी स्थान मिला।

परिचय :-

अंग्रेजी में जिसे रोमांटिसिज्म कहते हैं, हिंदी में उसे "छायावाद" कहते हैं। यों हिंदी कविता में छायावाद का युग द्विवेदी युग के बाद आया। किंतु उसका आरंभ द्विवेदी युग में ही हो गया था। उसके बहुत पहले बाँग्ला में रवींद्रनाथ की रचनाओं से छायावाद प्रतिष्ठित हो चुका था। सन् 1923 में गीतांजलि "पर रवींद्रनाथ को नोबेल पुरस्कार

होता है। छायावाद के मूल में भी यही विचार काम कर रहा है। इससे पूर्व द्विवेदी युग में हिन्दी कविता कोरी उपदेश मात्र बन गई थी। उसमें समाज सुधार की चर्चा आपक रूप से की जाती थी। और कुछ आख्यानों का वर्णन किया जाता था। उपदेशात्मकता और नैतिकता की प्रधानता के कारण कविता में नीरसता आ गई। कवि का हृदय उस निरसता से ऊट गया और कविता में सरसता लाने के लिए वह छटपटा उठा इसके लिए उसने प्रकृति को माध्यम बनाया। प्रकृति के माध्यम बनाया। प्रकृति के माध्यम से जब मानव भावनाओं का चित्रण होने लगा, तभी छायावाद का जन्म हुआ और कविता इतिवृत्तात्मकता को छोड़कर कल्पना लोक में विचरण करने लगी।

छायावाद के प्रमुख विशेषताएँ:

1) अंतर्मुखता :- छायावाद कविता में नीरसता और इतिवृत्तात्मकता के विरुद्ध आंदोलन है। इसलिए अंतर्मुखी है। इसमें प्रेम, विरह और करुणा की प्रधानता है।

2) भावुकता :- इसमें बुद्धिवाद की अपेक्षा भावुकता को अधिक स्थान मिला है। इसके प्रेमगीतों में आत्म-समर्पण की भावना अधिक रहती है। यह प्रेम, नारी प्रकृति और सौंदर्य की कविता है।

2. जयशंकर प्रसाद :-

काव्य के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुंदरी के बासहा वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतियी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद नाम से अभिहित किया गया। प्रसाद जी अंत में कहते हैं - छायावादी कविता भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की महिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लक्षणिकता, सौंदर्य, प्रकृति-विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषताएँ हैं।

श्री जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान करनेवाले महाकवि हैं। बाल्यकाल से ही साहित्य के प्रति आपकी विशेष रूचि थी। आपने प्रारंभ में ब्रज भाषा में कविता की। परन्तु बाद में खड़ीबोली को आपनाय। आपकी प्रतिभा बहुमुखी। धाराओं में प्रवाहित हुई। आपने कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास और निबंध आदि साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र को अपनी लेखनी से प्रकाशित किया। भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म का आपने विशेष अध्ययन किया। आपने हिन्दी कविता के भाव पक्ष और कलापक्ष दोनों की उन्नति की।

मिलने के बाद उनका काव्यप्रभाव अखिल भारतीय आधुनिक साहित्य पर पड़नें लगा था। हिंदी साहि पर भी पड़ा। द्विवेदीयुग के प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त की झंकार (सन् 1914-18) देखने ज्ञात होता है कि यत्र-तत्र भी रवींद्रनाथ की प्रतिभा से प्रभावित हुए।

छायावाद का "छाया" शब्द सूक्ष्मता का बोधक वह पंचभूतों को स्थूल रूप में नहीं ग्रहण करता। छायावाद के काव्यजगत् के लिए भी कवि के शब्दों यही कहा जा सकता है जो उसमें अपने मनोजगत् लिए कहा है,

यह छाया का देश, कल्पना की क्रीडास्थल
वस्तुजगत् अपना घनत्व खोकर इस जग में
सूक्ष्म रूप धारणा कर लेता, भावद्रवित हो।

कवि के केवल सूक्ष्म भावात्मक दर्शन का ही 'छाया' से उसके सूक्ष्म कलाभिव्यंजन का भी परिचय मिलता है। उसकी काव्यकला में वाच्यार्थ की अपेक्षा लाक्षणिकता और ध्वन्यात्मकता है। अनुभूति की निगूढ़ता के कारण अस्फुटता भी है। शैली में राग की नवोद्बुद्धता अथवा नवीन व्यंजकता है।

ृ के अग्रदूत है। प्रकृति का
मनोविज्ञान, माधुर्य, करुणा, वे
ृ गुणों से आपका काव्य भरा
ला - समय मधुर पक्ष की ओ
से आप श्रृंगार में रम जाते है
वाद भी विद्यमान है। भाषा
चुरता है।

(jayashankar Prasad)

'कामायनी' आपका महाकाव्य है। इसमें मानव-संस्कृति का मनोवैज्ञानिक अध्ययन है। इस पर बौद्ध का प्रभाव है। बुद्धिवाद की अतिरेकता से पीडित आधु मानव के लिए कवि का संदेश है कि बुद्धि और ह्र के बीच समरसता स्थापित करने से ही आनंद मिल है। 'आँसू' वियोग श्रृंगार का मुक्तक काव्य है। इसमें रहस्य की भावना है। "स्कन्दगुप्त' और "चन्द्रगुप्त" जैन आपके नाटकों में ऐतिहासिक गरिमा है। 'लहर", "झरना आदि आपके कविता संग्रह हैं। "कंकाल", 'तितली', इरावती उपन्यास हैं। "आकाशदीप" और "प्रतिध्वनि कहानी - संग्रह हैं। काव्य और कला तथा अन्य निबं आपके निबंधों का संग्रह हैं। हिन्दी - साहित्य जगत में आपका गौरवमय स्थान है।

जीवन - परिचय :-

प्रसाद जी का जन्म माघ शुक्ल 10, संवत् 1946 वि. (तदनुसार 30 जनवरी 1890 ई. दिन - गुरूवार) को काशी के सराय गोवर्धन में हुआ (इनके पितामह बाबू - शिवरतन साहू - दान देने में प्रसिद्ध थे और इनके पिता बाबू देवीप्रसाद जी कलाकारों का आदर करने की लिये विख्यात थे। इनका काशी में बड़ा सम्मान था और काशी की जनता काशीनरेश के बाद हर हर महादेव से बाबू देवीप्रसाद का ही स्वागत करती थी। किशोरावस्था के पूर्व ही माता और बड़े भाई का देहावसान हो जाने के कारण 17 वर्ष की उम्र में ही प्रसाद जी पर आपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा। कच्ची गृहस्थी, घर में सहारे के रूप में केवल विधवा भाभी कुटुंबियों, पखिार से संबद्ध अन्य लोगों का संपत्ति हड़पने का षड्यंत्र, इन सबका, सामना उन्होंने धीरता और गंभीरता के साथ किया, प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्वीन्स कालेज में हुई, किंतु बाद में घर पर इनकी शिक्षा का आपक प्रबंध किया गया, जहाँ संस्कृत, हिन्दी, उर्दू तथा फारसी का अध्ययन इन्होंने किया। दीनबंधु ब्रम्हाचारी जैसे विद्वान, इनके संस्कृत के अध्यापक थे। इनके गुरूओं में "समय शिव्द" की भी चर्चा की जाती है।

घर के वातावरण के कारणसाहित्य और कलाके प्रति उनमें प्रारंभ से ही रुचि थी और कहा जाता है कि नौ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'कलाधर" के नाम से ब्रजभाषा में एक सवैया लिखकर "रसमय सिद्ध" को दिखाया था। उन्होंने वेद, इतिहास, पुराण तथा साहित्य शास्त्र का अत्यंत गंभीर अध्ययन किया था। बाग - बगीचे तथा भोजन बनाने के शौकनि थे और शतरंज के खिलाड़ी। भी थे वे नियमित आयाम करनेवाले, सात्विक पान एंव गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे। वे नागरीप्रचारिणी सभा के उपाध्यक्ष भी थे। क्षय रोग से नवम्बर 15, 1937 (दिन - सोमवार) को प्रातःकाल (उम्र 48) उनका देहांत काशी में हुआ।

कृतियाँ :-

प्रसाद जी के जीवनकाल में ऐसो साहित्यकार काशी में वर्तमान थे जिन्होंने अपनी कृतियों द्वारा हिंदी साहित्य की वृद्धि की। उनके बीच रहकर प्रसाद ने भी अनन्य गौरवशाली साहित्य की सृष्टि की। कविता, कहानी, उपन्यास नाटक और निबन्धं, साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में उन्होंने ऐतिहासिक महत्व की रचनाएँ की तथा खड़ी बोली की श्रीसंपदा को महान और मौलिक दान से समृद्ध किया। कालक्रम से प्रकाशित उनकी कृतियाँ ये हैं।

काव्य :- प्रसाद ने काव्यरचना ब्रजभाषा में आरंभ की और धीरे-धीरे खड़ी बोली को अपनाते हुए की खड़ी बोली के मूर्धन्य कवियों में उनकी गणना की जाने लगी और वे युगवर्तक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

उनकी काव्य रचनाएँ दो वर्गों में विभक्त हैं काव्यपथ अनुसंधान की रचनाएँ और रससिद्ध रचनाएँ आँसू। लहर तथा कामयानी दूसरे वर्ग की रचनाएँ हैं।

निबंध :- प्रसाद ने प्रारंभ में समय पर इंदु में विविध विषयों पर सामान्य निबंध लिखे। बाद में उन्होंने शोधपरक ऐतिहासिक निबंध, यथा: सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य, प्राचीन आर्यवर्त और उसका प्रथम सम्राट आदि भी लिखे हैं। ये उनकी साहित्यिक मान्यताओं की विवेचनात्मक वैज्ञानिक भूमिका प्रस्तुत करते हैं। विचारों की गहराई, भावों की प्रबलता तथा चिंतन और मनन की गंभीरता के ये जाज्वल्य प्रमाण हैं।

(Sumithra Nandan Panth)

भाषा में लाक्षणिक प्रयोगों, ध्वन्यात्मक शब्दों एवं चित्रमय वर्णनों की प्रचुरता है। शब्द - चयन में सजगता और संगीत की माधुरी है।

कविता के क्षेत्र में आप अनेक उत्कृष्ट पुरस्कारों के विजेता हैं। 'ग्रान्थि', 'वीणा', पल्लव, युगवाणी, "कला और बूढा चान्द", "लोकायतन एवं चिदम्बरा" आपकी प्रमुख काव्य - कृतियाँ हैं।

सुमित्रानंदन पंत (२० मई १९००- २८ दिसम्बर १९७७) हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इस युग को जैसे कवियों का युग कहा, पुष्प, लता, भंवरा गुंजन, उषा किरणा, शीतल पवन, तारों की जुनरी ओढ़े गगन से उरती संध्य। से सब तो सहज रूप से काव्य का उपादना बने। निसर्ग के उपादानों का प्रतीक व बिम्ब के रूप में प्रयोग उनके काव्य की विशेषता रही। उनका व्यक्तित्व भी

2. सुमित्रानंदन पंत :-

कविवार सुमित्रानंदन पंत हिन्दी साहित्य छाया - वाद के प्रतिनिधि कवि हैं। आपने अंग्रेजी और बंगला की कविता से प्रभाव ग्रहण किया है। आप कविता में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति के समर्थक हैं। तथापि समकलिन अनेक साहित्यिक और अन्य धाराओं को आपने अपनी कविता में स्थान दिया है। छायावादी प्रगतिवादी, गाँधीवादी और अरविंद दर्शन की कविताएँ आपकी कलम से निकली हैं। यह विषय की विविधता है।

प्रमुख रूप से पन्त जी प्रकृति के कवि हैं। आप बचपन में रमणीय प्रकृति की गोद में पलकर बड़े हुए। अतएव प्रकृति - प्रेम पहले आपके स्वभाव का और बाद में कविता का प्रधान अंग बन गया है। वास्तव में कवित्व - रचना की प्रेरणा भी आपको प्रकृति से ही मिली है।

सुकुमार कल्पनाओं और कोमल भावनाओं को आपकी कविता में प्रमुख स्थान मिला है। विषय के अनुसार आपकी भाषा तत्सम - प्रधान ललित खड़ी - बोली है। इसमें संस्कृत के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग है।

आकर्षण का केंद्र बिंदु था, और गौर वर्ण, सुंदर सौम्य मुखाकृति, लंबे घुंघराले बाल, ऊंची नाजुक कविता का प्रतीक समा शारीरिक सौष्ठव उन्हें सभी से अलग मुखरित करता था।

विचारधारा :-

उनका संपूर्ण साहित्य 'सत्यम शिवम सुंदरम' के आदर्शों से प्रभावित होते हुए भी समय के साथ निरंतर बदलता रहा है। जहां प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति और सौंदर्य के रमणीय चित्र मिलते हैं वहीं दूसरे चरण की कविताओं में छायावाद की सूक्ष्म कल्पनाओं व कोमल भावनाओं के और अंतिम चरण की कविताओं में प्रगतिवाद और विचारशीलता के। उनकी सबसे बाद की कविताएं अरविंद दर्शन और मानव कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। पंत परंपरावादी आलोचकों और प्रगतिवादी व प्रयोगवादी आलोचकों के सामने कभी नहीं झुके। उन्होंने अपनी कविताओं में पूर्व मान्यताओं को नकारा नहीं। उन्होंने अपने ऊपर लगाने वाले आरोपों को 'नम्र अवज्ञा' कविता के माध्यम से खारिज किया। वह कहते थे गा कोकिला संदेश वह कहते थे गा कोकिला संदेश, सनातन, मानव का परिचय मानवपन।

रचनाकाल :-

पंत द्वारा कृत पल्लव, ज्योत्सना तथा गुंजन (1926-33) उनकी सौंदर्य एंव कला-साधना से परिचय करवाते हैं, इस काल को पंत का स्वर्णिम काल कहा जाना भी गलत नहीं होगा, वह सुरुयात शास्त्रीय संस्कृति पुनर्जागरण की आदर्शवादिता से प्रेरित थे, किंतु युगांत (1937) तक आते-आते बाहरी जीवन के प्रति खिंचाव से उनके भावात्मक दृष्टिकोण में परिवर्तन आने लगे।

सुमित्रानंदन पंत को दिए गए पुरस्कार :-

अन्य पुरस्कारों के अलावा सुमित्रानंदन पंत को भूषण (1961) और ज्ञानपीठ पुरस्कार (1968) से सम्मानित किया गया। अपनी रचना बूढ़ा चांद के लिए सुमित्रानंदन को साहित्य अकादमी पुरस्कार लोकायतन सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और चिदंबरा पर इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सुमित्रानंदन पंत की मृत्यु :-

28 दिसम्बर, 1977 को इलाहबाद (उत्तर प्रदेश) में सुमित्रानंदन पंत का देहांत हो गया उनकी मृत्यु के पश्चात उत्तराखंड राज्य के कौसानी में महाकवि की जन्म स्थली को सरकारी तौर पर अधिगृहीत कर उनके नाम पर एक राजकीय संग्रहालय बनाया गया है।

सुर्जनकुमार कहलाए। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव (बैसवाड़ा) के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले का गढ़कोला नामक गाँव के निवासी थे।

काव्यसंग्रह :-

जूही की कली कविता की रचना 1918 में की गई। अनामिका - 1923, परिमल 1930, गीतिका 1936, द्वितीय अनामिका 1938 अनामिका के दूसरे भाग में सरोज स्मृति और राम की शक्ति पूजा जैसे प्रसिद्ध कविताओं का संकलन है। तुलसीदास 1938, कुकुरमुत्ता 42, अणिमा 43, बेला 46, नये पत्ते 46, अर्चना 50, आराधना 53, गीतकुंज 54, सांध्यकाकली अपरा।

उपन्यास :- उच्छृंखला, अलका, प्रभावती 1946, निरूपमा, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा।

कहानी संग्रह :- लिली, चतुरी चमार, सुकुल की बीबी - 1941, सखी, देवी।

कहानी संग्रह :- लिली, चतुरी चमारा, सुकुल की बीबी - 1941 सखी - देवी।

निबंध :- रवीन्द्र कविता कानन, प्रबंध पद्मा, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संग्रह।

पुराण कथा :- महाभारत

अनुवाद :- आनंदमठ, विष वृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा कपालकुंडला, दुर्गेश नंदिनी, राज सिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युगलांगुलीय, चन्द्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्ण वचनामृत, भारत में विवेकानंद तथा राजयोग का बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद।

4 महादेवी वर्मा :-

हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावना कवयित्रियों में से हैं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा है। महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके समाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने सन की दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में

स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही। नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

श्रीमती महादेवी वर्मा हिन्दी में छायावाद और रहस्यवाद की कवइत्री हैं। बचपन से ही आपका पारिवारिक वातावरण अत्यंत सरुचिपूर्ण रहा।

तभी से आप सूर, तुलसी और मीरा के पद सुना करती थीं। इस करण से भक्ति का संस्कार उन्हें बाल्यकाल से ही मिला। आपकी माता धर्म, दया और दान गुणों से परिपूर्ण थीं। यह विरासत भी आपके व्यक्तित्व का अंग बन गया। आपने बौद्ध दर्शन का अच्छा अध्ययन किया। उसका प्रभाव करुणा के रूप में आपकी कविता पर पड़ा।

आपके ऊपर मीराबाई का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है। तभी तो आपके गीतों में प्रेम और वदेना की अधिकता है। अज्ञात प्रियतम के प्रति वेदना आपके हृदय का भाव - केंद्र है। आपके लिए वेदना के आगे मिलन - सुख कुछ भी नहीं। इसलिए आपने दुःख और करुणा को अपनी कविता का संबल बनाया है। आपकी कविता में आध्यात्मिक वियोग की सुंदर अभिव्यक्ति है। दुःख की तीव्र अनुभूति है। आपके रहस्यवाद की यह विशेषता है कि आप मनुष्य की सीमाबद्धता को। उसकी लघुता को अपना ससीम में उसीम को देखती हैं।

गीत लिखने में आपको जो सफलता मिली है, वह अत्यंत दुर्लभ है। प्रेम और दर्शन के संगम ने आपके गीतों को रसयुक्त बनाया है। आपकी अभिव्यंजना अनुपम है। भाषा में स्निग्धता, प्रौढ़ि प्रांजलता और प्रवाह है।

प्रमुख कृतियाँ :-

1. नीहार (१९३०)
2. रश्मि (१९३२)
3. नीरजा (१९३४)
4. सांध्यगीत (१९३६)
5. दीपशिखा (१९४२)
6. सप्तवर्णा (अनूदित - १९५९)
7. प्रथम आयाम (१९७४)
8. अग्निरेखा (१९९०)

श्रीमती महादेवी वर्मा के अन्य अनेक काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं। जिनमें उपर्युक्त रचनाओं में से चुने हुए गीत संकलित किये गये हैं। जैसे आत्मिका, परिक्रमा, सान्धिनी (१९६५), यामा (१९३६), गीत - पर्व, दीपगीत, स्मारिका, नीलांबरा और आधुनिक कवि महादेवी आदि।

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य :-

1. रेखाचित्र :- अतीत के चलचित्र (१९४१) और स्मृति की रेखाएं (१९४३)
2. संस्मरण :- पथ के साथी (१९५६) और मेरा परिवार
3. चुने हुए भाषणों का संकलन :- संभाषण (१९७४)
4. निबंध :- शृंखला की कड़ियाँ (१९४२), विवेचनात्मक, गद्य (१९४२), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (१९३२), संकल्पिता (१९६९)
5. ललित निबंध :- क्षणदा (१९५६)

आपकी कविता की सबसे बड़ी विशेषता चरणों की विषमता है। आप हिन्दी में मुक्तछंद के प्रवर्तक हैं। उन्होंने भावों की मुक्ति के लिए छंदों की मुक्ति को आवश्यक समझा है। तथापि ध्वनिसाम्य और अनुप्रासों के समुचित प्रयोग से हो जाता है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह दूसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उनके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं, फिर भी स्वतंत्र। इसी तरह कविता का भी हाल है।

आधुनिक हिन्दी के महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी का उपनाम 'निराला' है। आपको आपकी रचनाओं के आधार पर पौरुष-प्रधान कवि कहा गया है। किन्तु आपका व्यक्तित्व पौरुष, ओज, कठोरता और कोमलता का अद्भुत सम्मेलन है। वे जीवन, समाज और काव्य-तीनों क्षेत्रों में क्रांतिकारी रहे हैं। हिंदी कविता में प्रत्येक नूतन धारा की पताका लेकर आगे चलने-वाले कवि केवल 'निराला' हैं। आपने छायावाद, रहस्य वाद, प्रगीतवाद और नयी कविता पर आपने अमिटतत्व की छाप छोड़ दी है।

उनमें किसी भी विषय पर लिख सकने की प्रतिभा थी। उनके रहस्यवाद में बंगाली कवियों जैसी आध्यात्मिकता का सुरंग है। आपकी रहस्यवादी कविताएँ माधुर्य भावना को लेकर चली हैं। आपमें कविता सरस और संगीतात्मक बन पड़ी है।

आपके कविता-विषय विविध हैं। छत्रपति शिवाजी और तुलसीदास ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गरिमा से पूर्ण हैं। 'आराधना' और 'अर्चना भक्ति भावना से भरे हैं। 'राम की शक्तिपूजा' ओजमयी रचना है। 'सरोज-स्मृति' वैयक्तिक अनुभूति से भरी भावपूर्ण कविता है। जागो फिर एक बार जुही की कली और 'कुकुरमुत्ता' में क्रमशः प्रबोध, प्रणय और व्यंग्य विद्यमान हैं। आपकी भाषा में ओज, प्रवाह, कसक और गरिमा हैं। क्यों न हो, आप महाप्राण निराला जो हैं।

जीवन परिचय :-

हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक चर्चित साहित्यकारों में से एक सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल की रियासत महिषादल (जिला मेदिनीपुर) में माघ शुक्ल 11 संवत 1953 तदनुसार 11 फरवरी सन् 1896 में हुआ था। उनकी कहानी संग्रह लिली में उनकी जन्मतिथि 21 फरवरी 1899 अंकित की गई है। वसंत पंचमी पर उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा 1930 में प्रारंभ हुई। उनकी जन्म रविवार को हुआ था। इसलिए

3. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला :-

हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिन्दी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। 1930 में प्रकाशित अपने काव्य संग्रह परिमल की भूमिका में वे लिखते हैं —

"मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह दुसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उनके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं, फिर भी स्वतंत्र। इसी तरह कविता का भी हाल है।

आधुनिक हिन्दी के महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी का उपनाम 'निराला' है। आपको आपकी रचनाओं के आधार पर पौरुष - प्रधान कवि कहा गया है। किन्तु आपका व्यक्तित्व पौरुष, ओज, कठोरता और कोमलता का अद्भुत समन्वय है। वे जीवन, समाज और काव्य - तीनों क्षेत्रों में क्रांतिकारी रहे हैं। हिन्दी कविता में प्रत्येक नूतन धारा की पताका लेकर आगे चलने वाले कवि केवल, 'निराला' हैं। आपने छायावाद, रहस्य वाद, प्रगतिवाद और नयी कविता पर आपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ दी है।

उनमें किसी भी विषय पर लिख सकने की प्रतिभा थी। उनके रहस्यवाद में बंगाली कवियों जैसी आध्यात्मिकता का सुरंभ है। आपकी रहस्यवादी कविताएँ माधुर्य भावना को लेकर चली हैं। आपमें सामाजिक बंधनों के प्रति अरुचि है। आपकी प्रगतिवादी कविता में समाज के उपेक्षित, दलित और पीड़ित वर्ग को ऊपर उठाया गया है। 'वह बुड्ढा', 'भिक्षुक और 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताओं में कवि की गहरी करुणा प्रकट हुई है। इन कविताओं के शब्द-चय और रूप-चित्रण पर छायावादी प्रभाव है।

(Suryakanth Tripathi)

6. कहानियाँ :- बिल्लू
7. संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह :- हिमालय

(१९६३)

अन्य निबंध में संकल्पिता तथा विविध संकलनों में स्मारिका, स्मृति चित्र, संभाषण, संचयन, दृष्टिबोध उल्लेखनीय हैं। वे अपने समय की लोकप्रिय पत्रिका 'चाँद' तथा 'साहित्यकार' मासिक की भी संपादक रहीं। हिन्दी के प्रचार-प्रचार के लिए उन्होंने प्रयोग में साहित्यकार संसद और रंगवाणी नाट्य संस्था की भी स्थापना की।

महादेवी वर्मा का बाल साहित्य :-

महादेवी वर्मा की बाल कविताओं के दो संकलन छपे हैं।

1) ठाकुरजी भोले हैं
2) आज खरीदेंगे हम ज्वाला

(Mahadevi Varma)

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE FOR WOMEN, NALGONDA

DEPARTMENT OF HINDI

STUDENT PROJECT FOR 2017-18

TOPIC

BHISHM SAAHANI KA RACHNA SANSAAR

S.NO	NAME OF THE STUDENT	ROLL NO	GROUP&YEAR
1	R SUPRIYA	16044012441036	MPC II YEAR
2	SK KARISHMA	16044012445034	BZC II YEAR
3	TAAK JYOTHI	16044012405048	BCOM CA II YEAR
4	PARVEEN	16044012405031	BCOM CA II YEAR
5	L SHRUTHI	16044012405020	BCOM CA II YEAR

Study Project
18–19

"भीष्म साहनी"
के कथा संसार
पर
"परियोजना"
"कार्य"

भीष्म साहनी

जब कभी आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखों की चर्चा होती है वहां प्रख्यात साहित्यकर भीष्म साहनी का नाम बहुत ही सम्मान के साथ लिया जाता है।

इनको हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। भीष्म साहनी उन लेखकों मे से हैं जिनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ की दृष्टी से महत्वपूर्ण होती थीं।

'भीष्म साहनी' का जन्म 8 अगस्त, 1915 में रावलपिंडी [वर्तमान पाकिस्तान] में हुआ। इनके पिता अपने समय के प्रसिद्ध समाजसेवी थे जबकी प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता बलराज साहनी इनके बड़े भाई थे। भीष्म साहनी की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हिन्दी व संस्कृत में हुई।

बाद में उनका दाखिला स्कूल में कराया गया जहाँ उन्होंने उर्दू व अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की। 1937 में उन्होंने लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. किया। 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। वे मानवीय मूल्यों के लिए हिमायती रहे और उन्होंने विचारधारा को अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने दिया।

वामपंथी विचारधारा के साथ जुड़े होने के साथ-साथ वे मानविय मूल्यों को कभी आँखों से ओझल नहीं करते थे। आपाधापी और उठा-पटक के युग में भिष्म साहनी का व्यक्तित्व बिल्कुल अलग था।

उन्हें उनके लेखन के लिए वे चिरस्मरणीय रहेंगे। भीष्म साहनी हिन्दी फिल्मों के जाने माने अभिनेता बलराज साहनी के छोटे भाई थे। वे प्रगतीशील लेखक संघ और [आफ्रो-एशियन] लेखक संघ से भी जुड़े थे।

भीष्म साहनी थियेटर की दुनिया से भी नजदीक से जुड़े रहे। उन्होंने 1940 के करीब बड़े भाई बलराज साहनी की सरपरस्ती में इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन [इप्टा] में काम किया। 1950 में उन्होंने दिल्ली कॉलेज में अंग्रेजी के लेक्चरर के साथ रूप में अपनी सेवाएं भी दी थी।

"भीष्म साहनी"

जन्म : 8 अगस्त, 1915, रावलपिंडी, अविभाजित भारत

मृत्यु : 11 जुलाई, 2003, दिल्ली

मृत्यु स्थान : दिल्ली

अभिभावक : पिता : हरबंस लाल साहनी
माता : लक्ष्मी देवी

पत्नी : शीला

कर्म भूमी : भारत

कर्म- क्षेत्र : साहित्य

मुख्य रचनाएँ: * 'मेरी प्रिय कहानियाँ'
* 'झरोखे'
* 'तमस'
* 'बसन्ती'
* 'हानुस'
* पहला पाठ
* भटकती राख आदी।

विषय : कहानी, उपन्यास
नाटक, अनुवाद।

भाषा : हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दु,
संस्कृत, पंजाबी।

विद्यालय : गवर्नमेंट कॉलेज, पंजाब।

शिक्षा : एम. ए.,
पी. एच. डी.

पुरस्कार
उपाधि : * साहित्य अकादमी पुरस्कार [1975]
* लोटस पुरस्कार [1970]
* सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार [1983]
* पद्म भूषण [1998]

भीष्म साहनी की कहानियाँ:

भीष्म साहनी की पहली कहानी 'अबला' थी जो इंटर कालेज की पत्रिका 'रावी' में प्रकाशित हुई और दूसरी कहानी 'नीली आँखे', यह हंस में प्रकाशित है। यहीं से उनकी कहानी लेखन की परंपरा का प्रारंभ हुआ जो मृत्यु पर्यंत चलता रहा।

'अबला', 'खंडहर', 'आवाजें', 'चेहरे', 'नीली आँखे', 'भटकाव', 'फैसला', 'चीफ की दावत', 'चीलें', 'गल्मुच्छे', 'अमृतसर आ गया है', 'झूमर', 'निमित्त', 'ढोलक', 'तेंदुआ', 'साये' आदी कहानियाँ लिखकर वे हिंदी कहानी क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुए।

भीष्म साहनी ने सदैव यथार्थ को अपनी कहानियों का विषय बनाया। जिस तरह प्रेमचंद की परंपरा का लेखक कहे जाए। वे इस दिशा में यशपाल की उस शैली का थोड़ा अभ्यास किया मालूम पड़ते हैं जो प्रतिमुखता का एक चरम नाटकीय बिंदु पूरे घटनाक्रम के भीतर खड़ा कर लेती है और हमें अभिभूत करती है।

समाज को इस तरह देखने का काम मुंशी प्रेमचंद ने भी अपनी रचनाओं में किया लेकिन भीष्म साहनी का देखा-समझा समाज प्रेमचंद के आगे के समय का समाज है।

साथ ही भीष्म जी ने अपनी भाषा में वैसी ही सादगी और सहजता रखी जो रचनाओं में बौद्धिकों के वाग्जे निकालकर आम लोगों तक पहुंचा देती है।

यही विष्णु प्रभाकर की अद्भुत रचना 'आवारा मसीहा' के बजाय तमस को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला तो इसकी एक वजह ये इस उपन्यास की वह भाषा भी होगी जिससे विषय की मार्मिकता लोगों को दिलों तक पहुंच जाती है।

भीष्म सहानी जी की बेटी कल्पना बताती हैं, "वो जो कुछ भी लिखते थे सबसे पहले मेरी माँ को सुनाते थे। मेरी माँ उनकी सबसे पहली पाठक और सबसे बड़ी आलोचक थीं।"

"तमस की सफलता"

भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' का साहित्य जगत में बहुत ही स्थान बना है। यह उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय हुए सांप्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमी पर आधारित है। इसका अनुवाद 1988 में अंग्रेजी में किया गया। इस उपन्यास पर टेलीविजन धारावाहिक भी बनाया जा चुका है जिसमे ओमपूरी और अमरिश पुरी जैसे अभिनेताओं ने काम किया।

पुरस्कार

भीष्म साहनी जी को 'तमस' के लिए 1975 में साहित्य अकदमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

"हिंदुस्तानी पहले तो अपने देश से भागता है और बाद से उसी हिन्दुस्तान के लिए तरसने लगते है"।

भीष्म साहनी जी लेखन को सच्चाई को अपनी सच्चाई मानते थे, बेहद सादगी पसंद इनसान और दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य के प्रोफेसर साहनी को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। समाज के अंतिम शक्ति की आवाज उठाने वाले इस लेखक का 11 जुलाई सन् 2003 को इनका शरिर पंचतत्व हो गया।

"हुकुमत करनेवाले यह नहीं देखते की प्रजा में कौनसी समानता पायी जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों में एक दूसरे से अलग हैं।"

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE FOR WOMEN, NALGONDA

DEPARTMENT OF HINDI

STUDENT PROJECT FOR 2018-19

TOPIC

VACHYA PRAYOG

S.NO	NAME OF THE STUDENT	ROLL NO	GROUP&YEAR
1	B SHRUTI	18044012405020	BCOM CA I YEAR
2	SK NASREEN	18044012441054	MPC I YEAR
3	MD ARSHIYA	18044012468147	MPCS I YEAR
4	HAJEERA FATIMA	18044012467024	MSCS I YEAR
5	PARMEET KAUR	18044012405084	BCOM CA I YEAR

Hindi Project Work

2018 - 2019

Submitted by :-
1) B. Shruti - B.com
2) Sk. Nasreen - MPC
3) Md. Arshiya - MPCS
4) Hajeera Fatima - Mscs
5) Parameet - B.com

Topic - "वाच्य प्रयोग"

* वाच्य *

क्रिया के जिस रुपांतर से यह ज्ञात / बोध हो कि क्रिया द्वारा कियो गये विधान का मुख्य बिंदु / विषय कर्ता है, या कर्म उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य की परिभाषा :-

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है।

दूसरे शब्दों में - क्रिया के जिस रुपान्तर से यह ज्ञात हो कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का प्रधान विषय कर्ता, कर्म अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

इनमें किसी के अनुसार क्रिया के पुरुष,

वचन आदि आए हैं। इस परिभाषा के अनुसार वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन चाहे तो कर्ता के अनुसार होंगे अथवा कर्म के अनुसार अथवा भाव के अनुसार।

* वाच्य के भेद *

वाक्य में प्रयोग के आधार पर वाच्य के तीन प्रकार होते हैं-

① कर्तृवाच्य
② कर्मवाच्य
③ भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य (Active Voice) :-

क्रिया के उस रूपान्तर को कर्तृवाच्य कहते हैं जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो। सरल शब्दों में- क्रिया के जिस रूप में कर्म

* रमेश मिठाई खाता है।

* दिनेश पुस्तक पढ़ता है।

प्रधान हो, उसे कर्तवाच्य कहते हैं।

• उदाहरण के लिए -

* रमेश मिठाई खाता है।
* दिनेश पुस्तक पढ़ता है।

उक्त वाक्यों में कर्ता प्रधान है तथा उन्हीं के लिए 'खाता है' तथा 'पढ़ता है' क्रियाओं का विधान हुआ है, इसलिए यहाँ कर्तृवाच्य है।

2. कर्मवाच्य (Passive Voice) :-

क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो।

सरल शब्दों में - क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

• उदाहरण के लिए -

* कवियों द्वारा कविताएँ लिखी गई।

* रोगी को दवा दी गई।

* उससे पुस्तक पढी गई।

* मुझसे पत्र लिखा नही जाता।

* रोगी को दवा दी गई।
* उससे पुस्तक पढ़ी गई।

उक्त वाक्यों मे कर्म प्रधान है तथा उन्ही के लिए "लिखी गई, 'दी गई' तथा पढ़ी गई' क्रिया क्रियाओं का विधान हुआ है, अतः यहाँ कर्मवाच्य है।

यहाँ क्रियाएँ कर्ता के अनुसार रुपान्तरित न होकर कर्म के अनुसार परिवर्तित हुई है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अँगरेजी की तरह हिन्दी मे कर्ता के रहते हुए कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं होता, जैसे- 'मैं दूध पीता हूँ' के स्थान पर 'मुझसे दूध पीया जाता है' लिखना गलत होगा।

हाँ, निषेध के अर्थ में यह लिखा जा सकता है-

मुझसे पत्र लिखा नही जाता;
उससे पढ़ा नही जाता!

* मुझसे उठा नही जाता।

* धूप में चला नही जाता।

३. भाववाच्य (Impersonal Voice) -

क्रिया के उस रुपान्तर को भाववाच्य कहते हैं; जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो।

दूसरे शब्दों में - क्रिया के जिस रुप में न तो कर्ता की प्रधानता हो न कर्म की, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान हो, वहाँ भाववाच्य होता है।

• उदाहरण के लिए -

* मोहन से टहला भी नहीं जाता।
* मुझसे उठा नहीं जाता।
* धूप में चला नहीं जाता।

उक्त वाक्यों के कर्ता या कर्म प्रधान न होकर भाव मुख्य हैं; अतः इनकी क्रियाएँ भाववाच्य का उदाहरण हैं।

टिप्पणी - यहाँ यह स्पष्ट है कि कर्तृवाच्य में क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों हो सकती है, किन्तु कर्म-वाच्य में केवल सकर्मक और भाववाच्य में अकर्मक होती हैं।

* राकेश पुस्तक पढ़ रहा है।

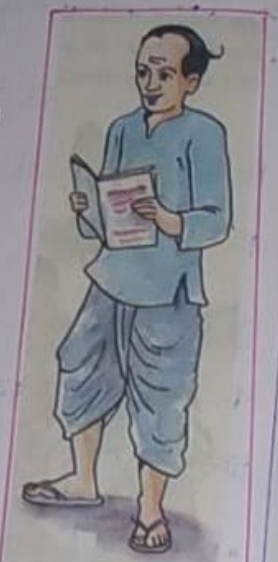

* मालया ने खाना खाया।

* वाच्य परिवतन *

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य (Active to passive)

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में रूपान्तरण के लिए हमें निम्नलिखित कार्य करने चाहिए -

(i) कर्त्ता कारक में करण कारक के चिह्न 'से'/'द्वारा' का प्रयोग करना चाहिए।

(ii) कर्म को चिह्न - रहित करना चाहिए।

(iii) क्रिया को कर्म के लिंग- वचन -पुरुष के अनुसार रखना चाहिए अर्थात कर्म प्रधान बनाना चाहिए।

उदाहरण :-

1. कर्तृवाच्य - राकेश पुस्तक पढ़ रहा है
   कर्मवाच्य - राकेश के द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है।

२. कर्तृवाच्य - मालया ने खाना खाया।
   कर्मवाच्य - मालया के द्वारा खाना खाया गया।

* कर्तृवाच्य - बच्चे शोर मचाएँगे।
कर्मवाच्य - बच्चों के द्वारा शोर मचाया जाएगा।

* कर्तृवाच्य - आप गाना गाइए।
कर्मवाच्य - आपके द्वारा गाना गाया जाय।

7

3. कर्तृवाच्य - बच्चे शोर मचाएँगे।
कर्मवाच्य - बच्चों के द्वारा शोर मचाया जाएगा।

4. कर्तृवाच्य - आप गाना गाइए।
कर्मवाच्य - आपके द्वारा गाना गाया जाय।

2. कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य (passive to active)

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए -

(i) कर्ता के अपने चिह्न (०, ने) आवश्यकतानुसार लगाना चाहिए।

(ii) यदि वाक्य की क्रिया वर्तमान एवं भविष्यत् की है तो कर्तानुसार क्रिया की रूप रचना रखनी चाहिए।

(iii) भूतकाल की सकर्मक क्रिया रहने पर कर्म के लिंग, वचन के अनुसार क्रिया को रखना चाहिए।

उदाहरण:-

1. कर्तृवाच्य - गोपाल पत्र लिखता है।
कर्मवाच्य - गोपाल से पत्र लिखा जाता है।

* कर्तृवाच्य-लडकिया गीत गा रही हैं।
कर्मवाच्य-लडकियों द्वारा गीत गाया जा रहे हैं।

*कर्तृवाच्य- लडकिया गीत गा रही हैं।
कर्मवाच्य- लडकियों द्वारा गीत गाए जा रहे हैं।

8

2. कर्तृवाच्य - लडकियाँ गीता गा रही हैं।
कर्मवाच्य - लडकियों द्वारा गीत गाए जा रहे हैं।

3. कर्तृवाच्य - मजदूर पत्थर नही तोड़ रहे।
कर्मवाच्य - मजदूरों से पत्थर नही तोड़े जा रहे।

3. कर्तृवाच्य से भाववाच्य (Active to Impersonal)

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन करने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए -

(i) कर्त्ता के साथ से / द्वारा चिह्न लगाकर उसे गौण किया जाता हैं।

(ii) मुख्य क्रिया के सामान्य क्रिया एवं अन्य पुरुष पुल्लिंग, एकवचन में स्वतंत्र रूप में रखा जाता हैं।

(iii) भाववाच्य में प्रायः अकर्मक क्रियाओं का ही प्रयोग होता हैं।

* कर्तृवाच्य- पक्षी रात मे सोते हैं।
कर्मवाच्य-पक्षियों से रात मे सोया जाता है।

* कर्तृवाच्य-बच्चे शांत नही रह सकते।
कर्मवाच्य-बच्चों से शांत नही रहा जाता।

उदाहरण :

1. कर्तृवाच्य - पक्षी रात मे सोते हैं।
   कर्मवाच्य - पक्षियो से रात मे सोया जाता हैं।

2. कर्तृवाच्य - बच्चे शांत नही रह सकते।
   कर्मवाच्य - बच्चों से शांत नही रहा जाता।

3. कर्तृवाच्य - वह तख्त पर सोता है।
   कर्मवाच्य - उससे तख्त पर सोया जाता है।

* वाच्य के प्रयोग *

वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष का अध्ययन 'प्रयोग' कहलाता है।

ऐसा देखा जाता हैं कि वाक्य की क्रिया का लिंग, वचन एवं पुरुष कभी कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता हैं, तो कभी कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार, लेकिन कभी-कभी वाक्य की क्रिया कर्ता तथा कर्म के अनुसार न होकर एकवचन, पुंलिंग

* लड़कियाँ पुस्तकें पढ़ेगी।

तथा अन्यपुरुष होती है; ये ही प्रयोग है।

* प्रयोग के प्रकार *

'प्रयोग' तीन प्रकार के होते हैं-

(क) कर्तरि प्रयोग
(ख) कर्मणि प्रयोग
(ग) भावे प्रयोग

(क) कर्तरि प्रयोग -

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तो उसे कर्तरि प्रयोग कहते हैं।

सरल शब्दों में - क्रिया के जिस रूप मे पुरुष, लिंग और वचन कर्ता के अनुसार हों, तो उसे कर्तरि प्रयोग कहते हैं।

जैसे -

* रोहन खाना खाता है।
* लड़कियाँ पुस्तकें पढ़ेगी।

पहले वाक्य में 'खाता' क्रिया कर्ता 'पवन के अनुकूल

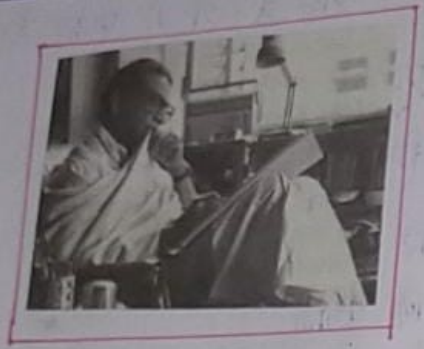

* सौरभ जी ने पुस्तक लिखी।

अन्य पुरुष पुल्लिंग और एकवचन है। दूसरे वाक्य में 'पढ़ेगी' क्रिया कर्ता 'लड़कियाँ' के अनुसार अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग और बहुवचन है। ये दोनों कर्तरि प्रयोग के उदाहरण हैं।

(ख) कर्मणि प्रयोग -

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तो उसे 'कर्मणि प्रयोग कहते हैं।

सरल शब्दों में - क्रिया के जिस रूप में पुरुष, लिंग और वचन कर्म के अनुसार हों, उसे कर्मणि प्रयोग कहते हैं।

जैसे - * सौरभ ने पुस्तक लिखी।
* गौरव ने कई पत्र लिखे।

इन वाक्यों में क्रियाएँ 'लिखी' तथा 'लिखे' क्रमशः कर्म 'पुस्तक' तथा 'कई पत्र' के अनुसार हैं, अतः ये कर्मणि प्रयोग हैं।

* माँ द्वारा पुत्र के लिए खाना परोसा गया।

(ग) भावे प्रयोग -

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर एकवचन, पुंल्लिंग तथा अन्य पुरुष हो तब भावे प्रयोग होता है।

इसमें क्रिया का रूप सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग और एकवचन में रहता है, वह कर्ता या कर्म के अनुसार नहीं होता। ध्यान रखिए कि तीनों वाच्यों में भावे प्रयोग देखे जा सकते हैं। जैसे -

कर्तृवाच्य में - हरीश ने लडके को पीटा।
हरीश ने लड़की को पीटा।
हरीश ने लड़कों को पीटा।

कर्मवाच्य में - माँ द्वारा पुत्र के लिए खाना परोसा गया।
माँ द्वारा पुत्री के लिए खाना परोसा गया।
माँ द्वारा सबके लिए खाना परोसा गया।

भाववाच्य मे - उससे खड़ा नही हुआ गया।
उनसे खड़ा नही हुआ गया।
हमसे खड़ा नही हुआ गया।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE FOR WOMEN, NALGONDA

DEPARTMENT OF HINDI

STUDENT PROJECT FOR 2018-19

TOPIC

RAHEEM KE DOHE VYAKTITHV KE VIKAS SOPAN

S.NO	NAME OF THE STUDENT	ROLL NO	GROUP&YEAR
1	SAFOORA BEGUM	17044012445040	BZC II YEAR
2	RUMA FAROZA	17044012445038	BZC II YEAR
3	AMATUN NOOR ATIKA	17044012445002	BZC II YEAR
4	SHERIEN AZRA	17044012569031	MPCA II YEAR
5	TANVEER SULTANA	17044012569044	MPCA II YEAR

GOVT. DEGREE COLLEGE FOR WOMEN'S NALGONDA - 508 001. (T.S.)

RAHEEM KE DOHE OUR VEKTITV VIKAS SOPAN

Submitted by :

1. Sherien Azra — B.Sc. (Computers) - II Yr. EM, Roll NO. 17044012569031
2. Tanveer Sulthana — B.Sc. (Computers) - II Yr. EM, Roll No. 17044012569044
3. Safoora Begum — B.Sc. (Botony) - II Yr. EM, Roll No. 17041012445040
4. Amtul Noor Athika — B.Sc. (Botony) - II Yr. EM, Roll No. 17044012445002
5. Ruma Faroza — B.Sc. (Botony) - II Yr. EM, Roll No. 17044012445038

A PROJECT WORK ON

RAHEEM KE DOHE AUR VEKTITV VIKAS SOPAN

SUBMITTED DURING THE II YEAR

OF

BACHELOR OF SCIENCE

IN

B.SC COMPUTERS&BOTANY

PRESENTED BY

SHERIEN AZRA	(17044012569031)
TANVEER SULTHANA	(17044012569044)
SAFOORA BEGUM	(17041012445040)
AMTHULNOOR ATHIKA	(17044012445002)
RUMA FAROZA	(17044012445038)

SUBMITTED TO

SMT.DR.APARNA CHATURVEDI

DEPARTMENT OF HINDI

WITH GRATITUDE TO

MR.DR.GHANSHYAM(M.A.PHD)

Government Degree College for Women
RAMAGIRI - NALGONDA.

AFFILIATED TO MAHATMA GANDHI UNIVERSITY

TELANGANA(2018-2019)

JIGNASA STUDENT STUDY PROJECT 2018-2019

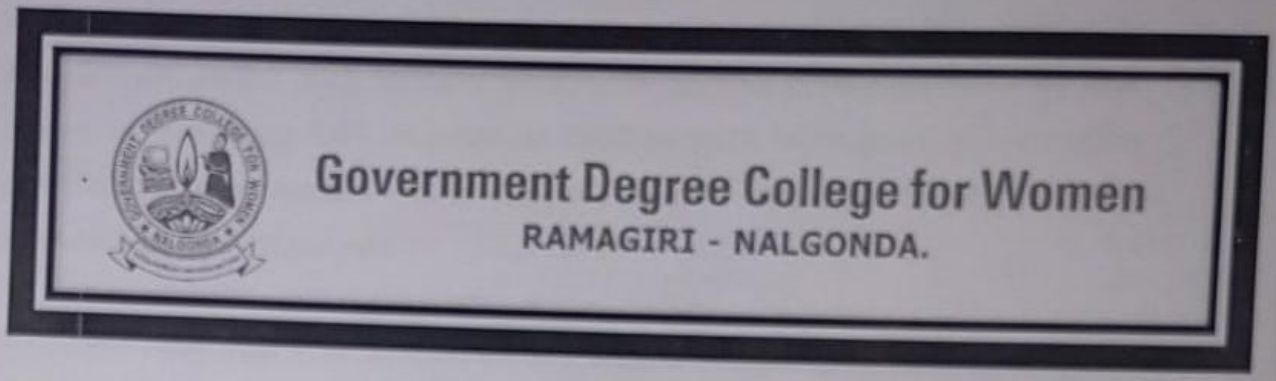

AFFILIATED TO MAHATMA GANDHI UNIVERSITY

TELANGANA(2018-2019)

ACKNOWLEDGEMENT

We are extremely greatful to our beloved project guide **DR.APARNA CHATURVEDI , GOVT. DEGREE COLLEGE FOR WOMENS, NALGONDA.** For encouragement constant enthusiasm throughout this project work. We intended to acknowledgement our deep sense of gratitude to them for noblest guidance we ever head we are thankful to **SMT DR.APARNA CHATURVEDI,** incharge of the head of the department and we are thankful to our principal **MR. DR. GHANSHYAN** from the guidance and encouragement.

We have tried to bring out the importance of hindi language and its usage in todays day to day life and have focused on the "RAHEEM KE DOHE OUR VEKTITV VIKAS SOPAN"

We accord our highest respect to our beloved parents for support and encouragement.we also thankful one and all who have directly or indirectly helped us for the successful completion of our project work.

DECLARATION

I here by declared that the students of **B.Sc. (Computers & Botony)** **II year E/M** have successfully completed the project work on **"RAHEEM KE DOHE OUR VEKTITV VIKAS SOPAN"**

H.O.D.,
Smt. Dr. Aparna Chaturvedi

Principal
Mr. Dr. Ghanshyan

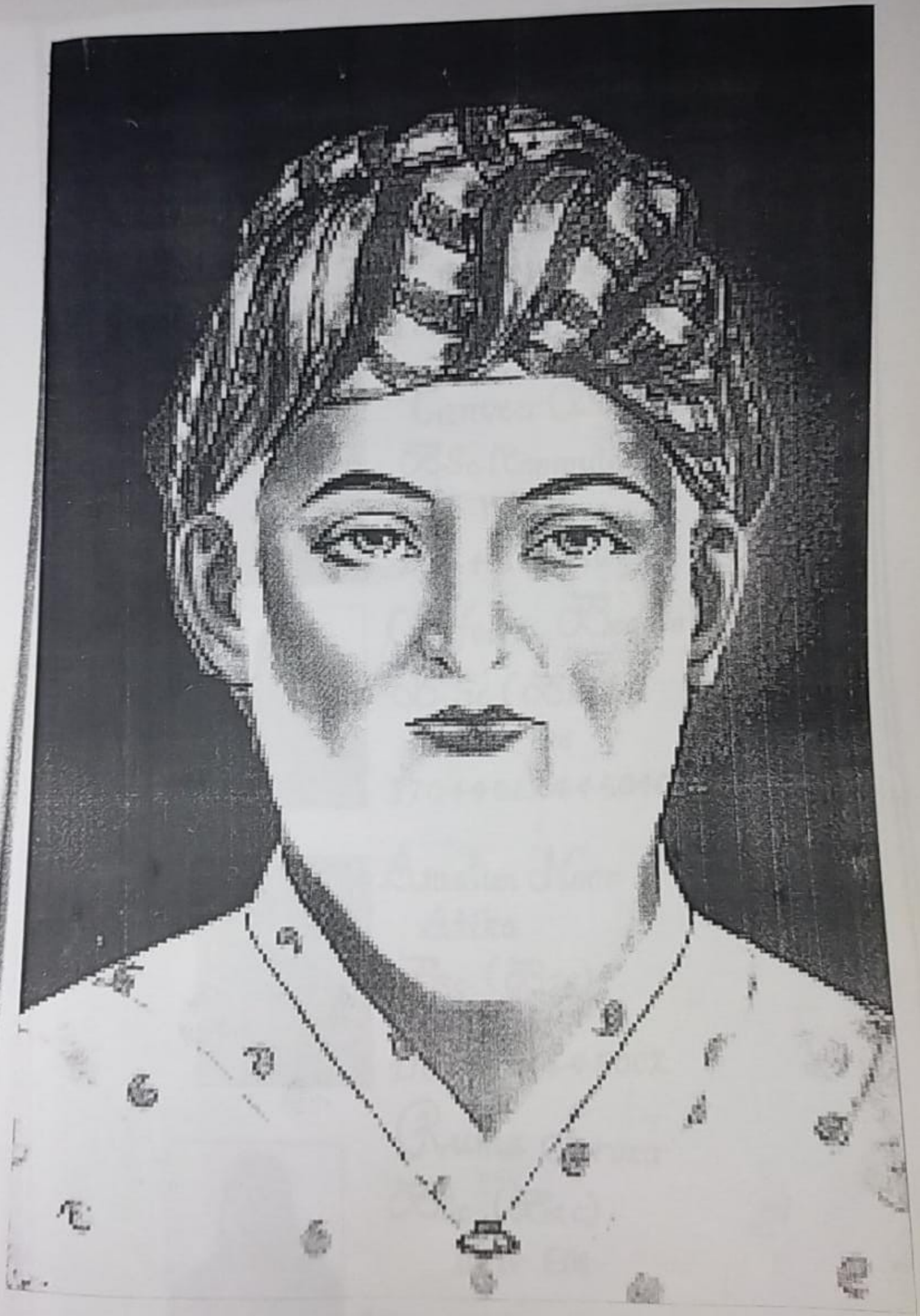

Submitted By

Sherien Azra
BSc. (Computers)
II Yr. EM
17044012569031

Tanveer Sulthana
BSc. (Computers)
II Yr. EM
17044012569044

Safoora Begum
B.Sc. (Bzc)
II Yr. EM
17044012445040

Amatun Noor Atika
BSc. (Bzc)
II Yr. EM
17044012445002

Ruma Faroza
BSc. (Bzc)
II Yr. EM
17044012445038

रहीम के दोहे और व्यक्तित्व विकास सोपान

१. रहीम जी का जीवन परिचय
२. रहीम और अकबर का संरक्षण
३. कलम और तलवार के धनी
४. रहीम का आत्मोदय
५. रहीम के दोहे - नीतिपरक दोहे, दान धर्म संबंधी
६. रहीम
७. रहीम के शुद्धविचार

रहीम जी का जीवन परिचय

रहीम जी का जीवन परीचय :

पूरा नाम : अब्दुरहीम ख़ानख़ाना

जन्म : 17 दिसबर 1556 ई

जन्म भूमि : लाहौर

मृत्यु : 1627 ई (उम्र-70)

अभि मावक : बैरम खाँ

पति/पत्नी : माह्बानू बेगम

संतान : शाह्नवाज़, दाराब, रहमानदाद

कर्म भूमि : दिल्ली

मुख्य : रहीम रत्नावली, रहीम विलास, रहीम विनोद, रहीम कवितावली, रहीमन चंद्रिका, रहिमन शतक

विषय : श्रंगार, नीति और भक्ति

भाषा : अरबी, तुर्की, फारसी, संस्कृत, हिन्दी

पुरस्कार उपाधि : ख़ानख़ाना

नागरिकता : भारतीय

प्रसिद्धि : अकबर के नवरत्नों में से एक

इन्हें भी : कवि सूची, साहित्यकार सूची

कवि परिचय :-

रहीम का पूरा नाम अब्दुरहीम ख़ानख़ाना अथवा अब्दुरहीम खाँ हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे। अकबर के दरबार में इनका महत्वपूर्ण स्थान था। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। गुजरात के युद्ध में शौर्य प्रदर्शन के कारण अकबर ने इन्हें ख़ानख़ाना की आधि थी।

अब्दुरहीम खाँ ख़ानख़ाना मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति के प्रतिनिधि कवि थे। अकबरी दरबारी के हिंदी कवियों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। ये स्वयं भी कवियों के आश्रयदाता थे। केशव, आसकरन मंडन, नरहरि और गंग जैसे कवियों ने इनकी प्रशंसा की है। ये अकबर के अभिभावक बैरम खाँ के पुत्र थे। अब्दुल रहीम ख़ानखाना का जन्म 17 दिसम्बर, 1556 ई (माघ, कृष्ण पक्ष, गुरुवार) को सम्राट अकबर के प्रसिद्ध अभिभावक बैरम खाँ को यहाँ लाहौर में हुआ था। उस समय रहीम के पिता बैरम खाँ पानीपत के दूसरे युद्ध में हेमू

को हराकर बाबर के साम्राज्य की पुनर्स्थापना कर रहे थे। बैरम खाँ अमीर अली शुकर बेग के वंश में से थे।

जबकी उनकी माँ सुलताना बेगम मेवाती जमाल खाँ की दूसरी पत्नी थी। कविता करना बैरम खाँ के वंश खानदानी परम्परा थी। बाबर की सेना में भर्ती होकर रहीम के पिता बैरम खाँ अपनी स्वामी भक्ति और वीरता से हुमायूँ के विश्वासपात्र बन गए थे।

हिम और अधिकार का रहस्य

रहीम के पिता अकबर का संरक्ष

बादशाह अकबर का यह आदेश बैरम खाँ के परिवार को जालौर में मिला, जिससे कुछ आशा बंधी रहीम और उनकी माता परिवार के अन्य सदस्यों के साथ सन् 1562 में राजदरबार में पहुँचे। अकबर ने रहीम का पालन-पोषण तथा शिक्षा-दीक्षा शहज़ादों की तरह शुरू करवाई, जिससे दस-बारह साल की उम्र में ही रहीम का व्यक्तित्व आकार ग्रहण करने लगा। अकबर ने शहज़ादों को प्रदान की जाने वाली उपाधि मिर्जा खाँ से रहीम को सम्बोधित करना शुरू किया।

अकबर रहीम से बहुत अधिक प्रभावित था और उन्हें अधिकाश समय तक अपने साथ ही रखता था। परन्तु उन सभी कामों में मिर्जा खाँ अपनी योग्यता के बल पर सफल होते थे। अकबर ने रहीम की शिक्षा के अरबी एवं फारसी भाषा सीखी!

कलम और तलवार के धनी

ख़ानख़ाना की युद्धनीति

रहीम ख़ानख़ाना के सैनिकों को अब काफ़ी परेशानियाँ उठानी पड़ीं। दो महीने घेरा डालने के बाद भी उन्हें सफलता नहीं मिली। जानी बेग के छापामार सैनिक किले से निकलकर मुग़लों को परेशान करते और खाद्य सामग्री लूट लेते थे। जब खाद्यान्न की कमी हो गई तो ख़ानख़ाना ने बादशाह से मदद माँगी। बादशाह ने ढाई लाख रुपये, अनाज और तोपों से सजी कुछ नौकाएँ भेजीं। लेकिन जब इससे भी समस्या हल नहीं हुई तो उन्होंने जानी बेग के रसद आपूर्ति के स्त्रोतों पर अधिकार करना ज़रूरी समझा। उन्होंने मुग़ल सैनिकों के पाँच दस्तों की सहायता से शत्रु के रसद आपूर्ति ठिकानों पर क़ब्ज़ा कर लिया। इससे ख़ानखाना के सैनिकों को खाद्य सामग्री की पूर्ति सम्भव हो सकी।

तत्पश्चात् ख़ानख़ाना ने अपनी युद्धनीति के अनुसार आक्रमण करके बुहरी किले को ध्वस्त कर दिया। शत्रुओं ने जमकर संघर्ष किया, लेकिन अन्ततः पराजित हुए। जानी बेग ने युद्ध भूमि से भागकर उरनपुर में शरण ली। ख़ानख़ाना ने इस बार क़िले की घेराबन्दी करने में चूक नहीं की। यह घेरा छः माह तक चलता रहा। इतने में बारिश शुरु हो गई। लगातार बारिश के कारण तीन तरफ़ से नदी का जल तथा एक तरफ़ मुग़लों की घेराबन्दी से जानी बेग की खाद्य आपूर्ति लगभग समाप्त हो गई। नदी से सामग्री पहुँचना मुग़लों के क़ब्ज़े के कारण असम्भव था। तोपों की गोलाबारी से भीतर रहना मुश्किल हो गया था। लोग ऊँट आदि खाने लगे थे। जानी बेग के सैनिक भूख से व्याकुल होकर ख़ानख़ाना की शरण में आने लगे। ख़ानख़ाना की उदारता के फलस्वरूप अनेक सिन्धी तो मुग़ल सेना में शामिल हो गए।

ख़ानख़ाना की उपाधि

रोसा होने से दुश्मनों ने यह समझा कि एक तरफ से अकबर और दूसरी तरफ से मालवा की सेना ने एक साथ आक्रमण कर दिया है। वे तत्काल मैदान छोड़कर भागने लगे। परिणामतः मुज़फ़्फ़र खाँ को भी वहाँ से भागकर अपनी जान बचानी पड़ी। इस विजय से रहीम 'मिर्ज़ा ख़ाँ' की बहादुरी की धाक जम गई और उनके दरबारी दुश्मनों के मुँह बन्द हो गए। इसी के साथ रहीम को 'खानखाना' की उपाधि तथा कई जागीरों से सम्मानित किया गया।

सन् 1584 में जब बादशाह अकबर अपने परिवार के साथ कश्मीर और काबुल घाटी की यात्रा पर गया तो रहीम ख़ानख़ाना भी उसके साथ थे। रहीम ने अवकाश के दिनों में बाबर की आत्मकथा तज़के बाबरी का तुर्की से फ़ारसी में अनुवाद किया।

फिर 24 नवम्बर, 1589 को जब बादशाह " यात्रा से लौट रहे थे तो उन्होंने यह अनुवाद उन्हें रास्ते में ही भेंट किया।

अकबर ने रहीम की साहित्यिक कृति से प्रसन्न होकर राजा टोडरमल की मृत्यु से रिक्त साम्राज्य के वकील के पद पर उन्हें अधिष्ठित कर दिया। रहीम के पिता बैरम ख़ाँ भी साम्राज्य के वकील थे। यद्यपि उस समय तक इस पद के अधकार कुछ कम हो गए थे। लेकिन बादशाह और शहज़ादों के अधिकारों के बाद यही सर्वोच्च पद था। रहीम को जौनपुर का सूबा जागीर के रूप में प्रदान किया गया। उन्हें अकबर के दिनों में दरबार में आनेवाले कवियों आदि को दान देना पड़ता था। इसके अलावा साम्राज्य के सर्वश्रेष्ठ अमीर के ख़र्चे भी अधिक थे। रहीम को प्रतिष्ठा, कुल की मर्यादा और आन-बान के अनुसार ख़र्च करना पड़ता था, इस वजह से उनकी आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने लगी थी।

सिन्ध पर विजय :-

आख़िर में जानी बेग ने अपने दूतों से कहलवाया कि अल्लाह के नाम पर अपने ही धर्म के लोगों की हत्या रोक दें। ख़ानख़ाना ने दूतों का स्वागत किया और यह सन्धि प्रस्ताव स्वीकृत किया कि सेहवान दुर्ग रावं बीस युद्धपोत मुग़लों को दे दिए जाएँ। जानी बेग अपनी पुत्री का विवाह इरीज़ से करें तथा सिन्ध के शासक राजदरबार में उपस्थित होकर बादशाह की अधीनता स्वीकार कर लें। सन्धि होने के बाद सैनिक-घेरा उठा लिया गया। जानी बेग ने तीन माह का वक़्त माँगा ताकि वह ठट्टा जाकर अपनी राजधानी लाहौर ले चलने का प्रबन्ध कर सके।

सेहवान दुर्ग की चाबी ख़ानख़ाना के वहाँ पर पहुँचने पर दुर्गपाल के द्वारा प्रदान कर दी गई। तीन महीने का वक़्त समाप्त होने पर भी द्वार प्रदान कर दी गई। जानी बेग राजधानी से निकलकर फ़तेहाबाद में डेरा डाले पुर्तग़ाली सेना के आने का इंतज़ार कर रहा था।

मुग़ल सेना फ़तेहाबाद पहुँच गई। तब जानी बेग ने आगे बढ़कर ख़ानख़ाना का स्वागत किया। उसकी धूर्तता तथा बहानेबाज़ी नहीं चल पाई। ख़ानख़ाना ने मुग़लों को उसकी मित्रता का विश्वास दिलाने के लिए उससे जहाज़ी बेड़ा समर्पित करने को कहा।

जानी बेग के पास दो ही रास्ते थे- गिरफ़्तारी या अधीनता। उसने अपना जहाज़ी बेड़ा जो कि उसकी रीढ़ था, मुग़लों को दे दिया सिन्ध पर विजय प्राप्त करके ख़ानख़ाना ठट्ठा चले गए। वहाँ से प्रस्थान करते समय अपनी सारी सामग्री जो उनके पास थी, अपने अमीरों और कर्मचारियों में वितरित कर दी। वे फ़तेहाबाद में लौटकर आए ही थे कि उन्हें पराजित शत्रु के साथ दरबार में उपस्थित होने का शाही आदेश मिला। ख़ानख़ाना जानी बेग के साथ अविलम्ब वहाँ से चलकर दरबार में हाज़िर हुए। इससे उनकी अभ्यर्थना पर बादशाह अकबर बहुत खुश हुआ।

ईम का बादशाह

रहीम का भाग्योदय :-

रहीम के भाग्य का उत्कर्ष सन् 1573 से शुरू होता है। जो अकबर के समय सन् 1605 तक चलता रहा। इस बीच बादशाह अकबर राक बार रहीम से नाराज़ भी हो गरा, लेकिन ज़्यादा दिनों सक यह नाराज़गी नही रह सकी।

सन् 1572 में जब अकबर पहली बार गुजरात विजय के लिये गया तो 16 वर्षीय रहीम मिर्ज़ा खाँ असके विजये के लिरा गया तो 16 वर्षीय रहीम मिर्ज़ा खाँ उसके साथ ही थे। उसे चारों ओर से नगर में घेर लिया गया यह समाचार पाकर बादशाह अकबर सन् 1573 में दिनो में ही साबरमती नदी के किनारे पहुँच गया। रहीम मिर्ज़ा खाँ को अकबर के नेतृत्व में मध्य कमान का कार्य भार सौंपा गया। मिर्ज़ा खाँ ने बड़ी बहादुरी से युद्ध करके दुश्मन को परास्त किया। यह उनका पहला युद्ध था।

अकबर के साथ ही रहीम लौट आरा। कुछ वक्त बाद मिर्ज़ा खाँ को राणा प्रताप, जो उन दिनों दक्षिणी पहाड़ियों के दुर्गम जंगल में थे, से लड़ने के लिरा राजा मानसिंह और भगवान

दास के साथ भेजा गया। आंशिक सफलता के बाद भी जब राणा प्रताप अपराजित रहे तो शाहबाज़ ख़ाँ के नेतृत्व में पुनः सेना भेजी गई। इसमें भी रहीम 'मिर्ज़ा ख़ाँ' शामिल थे जिन्होंने 4 अप्रैल, 1578 को दोबारा आक्रमण किया। अभी तक रहीम प्रसिद्ध सेनानायकों के नेतृत्व में युद्ध का अनुभव प्राप्त कर रहे थे।

रहीम मिर्ज़ा ख़ाँ को ज़िम्मेदारी का पहला स्वतंत्र पद सन् 1580 में प्राप्त हुआ। फिर अकबर ने उन्हें मीर अर्ज़ के पद पर नियुक्त किया। इसके बाद सन् 1583 में उन्हे शहजादा सलीम का अतालीक़ (शिक्षक) बना दिया गया। रहीम को इस नियुक्ति से बहुत खुशी हासिल हुई। उन्होंने इस उपलक्ष्य में लोगों को एक शानदार दावत दी, जिसमें ख़ुद बादशाह अकबर भी मौजूद था। मिर्ज़ा ख़ाँ और उनकी पत्नी माहबानो को बादशाह ने उपहारों से सम्मानित किया।

रहीम अभी इस दायित्व का निर्वाह कर ही रहे थे कि उन्हें ख़बर मिली कि आगरे के किले से भागे हुए कैदी मुज़फ़्फ़र ख़ाँ ने साथियों आदि

के साथ मिलकर फिर सेना तैयार करनी शुरू कर दी है। बैरम खाँ का दुश्मन शहाबुद्दीन उस वक्त गुजरात का सूबेदार था। वह अकबर का हुक्म नहीं मान रहा था। अकबर को इस बात का शक था कि वह विश्वासघात कर रहा है।

रहीम के दोहे

रहीम के दोहे
रहिमन धागा प्रेम का,
मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े,
जुड़े गाँठ परि जाय।

ीम के दोहे हिंदी अर्थ सहि
दोहा:
रहिमन धागा प्रेम का, मत टोरो च
टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी ज
अर्थ:
रहीम ने कहा की प्यार का नाता नाजुक होता है, इसे
होता, अगर ये धागा एक बार टूट जाता है तो फिर इसे
होता है, और यदि मिल भी जाये तो टूटे हुए धागों के

नीतिपरक दोहे

दान धर्म संबंधी दोहे

लोक व्यवहार संबंधी दोहे

रहीम के दोहे :

रहीम दास न सिर्फ एक अच्छे कवि के रूप में विख्यात हुए बल्कि वे मुगल सम्राट अकबर के दरबार में नवरत्नों में से एक थे। उनका पूरा नाम नवाब अब्दुल रहीम खान-ई-खाना था। रहीम दास जी का हिन्दी साहित्य में दिया गया योगदान अभूतपूर्व है जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकता।

रहीम दास जी ने अपने दोहों के माध्यम से ने सिर्फ लोगों को सही तरीके से जीवन जीने की कला सिखाई बल्कि जनता को नीति से संबंधित बातें बताई इसके साथ ही लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए भी प्रेरित किया है और उन्हें सही मार्गदर्शन देने की कोशिश की है।

रहीम दास जी कलाप्रेमी महान कवि और एक अच्छे साहित्यकार थे। वे अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के अंशो को उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करते थे। जो भारतीय संस्कृति की झलक का पेश करता है। रहीम दास ने अपनी काव्य रचना द्वारा हिन्दी साहित्य की जो सेवा की वह अद्भुत और काफी

प्रशंसनीय हैं। रहीम की कई रचनाएं प्रसिद्ध हैं जिन्हें उन्होंने दोहों के रूप में लिखा।

आपको बता दें कि उनकी सभी कृतियां "रहीम ग्रंथावली" में समाहित हैं। रहीम के ग्रंथो में रहीम दोहावली या सतसई, बरवै, मदनाष्टक, रास पचाध्यायी नगर शोभा, नायिका भेद, श्रृंगार, सोरठा, फुटकर बरवै, फुटकर छंद तथा पद, फुटकर वार्तिक, सवैये, संस्कृत काव्य प्रसिद्ध हैं।

रहीम के तुर्की भाषा में लिखी बाबर की आत्मकथा "तुजके बाबरी" का फारसी में अनुवाद किया। "मआसिरे रहीमी" और "आइने अकबरी" में इन्होंने "खानखाना" और रहीम नाम से कविता की हैं।

रहीम दास जी का व्यक्तित्व बेहद प्रभावशाली और हर किसी को अपनी तरफ आकर्षित करने वाला था। वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। रहीम ने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को लिया हैं।

इसके साथ ही रहीम दास एक महान विचारक हैं और समाज सुधारक भी थे जिन्हें अवधी, ब्रज, अरबी फारसी, तुर्की, और हिन्दी का अच्छा ज्ञान था। इसके साथ ही रहीम दास को छंद रचना, कविता, गणित, तर्कशास्त्र तथा फारसी व्याकरण का भी उच्च कोटि का ज्ञान था।

महान कवि रहीम दास को उनकी वीरता, रणनीति, राज्य-संचालन, दानशीलता और काव्य जैसे अद्भुत गुण अपने माता-पिता से विरासत में मिले थे। बचपन से ही रहीम साहित्य प्रेमी और बुद्धिमान थे।

आपको बता दें कि रहीम ने अपने दोहे में खुद को "रहिमन" कहकर कभी सम्बोधित किया है। इसके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है।

रहीम ने अपने जीवन के अनुभवों से कई दोहों को बेहद सरल और आसान भाषा शैली में अभिव्यक्त किया है। जो कि वास्तव में अद्भुत है। रहीम दास जी ने अपनी कविताओं में छंदों, दोहों में पूर्वी अवधी, ब्रजा भाषा तथा खड़ी बोली का इस्तेमाल किया है। रहीम ने तद्भव शब्दों का ज्यादा इस्तेमाल किया है।

रहीम दास जी ने अपने इस दोहे के माध्यम से ऐसे लोगों को शिक्षा देने की कोशिश की हैं, जिन्हें यह लगता हैं कि उन्हें किसी अन्य नाम से पुकारने से उनका महत्व कम हो जाएगा या फिर वे छोटे हो जाएंगे।

दोहा : 1

"जो बडेन को लघु कहें, नहीं रहीम घटी जाहिं।
गिरधर मुरलीधर कहें, कछु दुःख मानत नाहिं।"

अर्थ :

रहीम अपने दोहें में कहते हैं कि किसी भी बडे को छोटा कहने से बडे का बडप्पन कम नहीं होता, क्योंकि गिरिधर को कान्हा कहने से उनकी महिमा में कमी नहीं होती।

क्या सीख मिलती है :

रहीम दास जी के इस दोहे से माध्यम से हमें यह सीख मिलती हैं कि बड़प्पन नाम से नहीं बल्कि कामों से दिखता हैं। इसलिए किसी भी बडे को छोटा कहने पर उसका बडप्पन कम नहीं होता।

रहीम दास जी का यह दोहा उन लोगों के लिए है जो लोग अपनी असफलता के लिए या फिर किसी गलत काम के लिए खुद को नहीं बल्कि गलत लोगों से मित्रता यानि कि बुरी संगति को दोष देकर खुद को संतोष देते हैं।

दोहा : २

"जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापे नहीं, लिपटे रहत भुजंग।"

अर्थ :

रहीम जी ने कहा की जिन लोगों का स्वभाव अच्छा होता है, उन लोगों को बुरी संगती भी बिगाड नहीं पाती, जैसे जहरीले साप सुगंधित चन्दन के वृक्ष को लिपटे रहने पर भी उस पर कोई प्रभाव नहीं डाल पाते।

क्या सीख मिलती है :

महाकवि रहीम दास जी के इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें सदैव अपनी बुद्धि और विवेक से काम करना चाहिए और कभी खुद पर किसी दूसरे का बुरा प्रभाव नहीं पडने देना चाहिए क्योंकि जब तक हम खुद अच्छे नहीं बनेंगे और खुद का आचरण सही नहीं रखेंगे तब तक हम दूसरों को भी अपनी असफलता के लिए कोसते रहेंगे।

आज के समाज में बहुत लोग रोसे होते हैं जिन्हें रिश्तों की कदर नहीं होती है और वे बडी आसानी से रिश्ता तोड लेते हैं और यह नहीं समझते कि प्यार का रिश्ता बडा ही नाजुक होता है जो राक बार टूट जाए तो उसे आसानी से दोबारा नहीं जोडा जा सकता है। ऐसे लोगों के लिए रहीम दास जी ने अपने इस दोहे में बडी सीख दी है।

दोहा : 3

"रहिमन धागा प्रेम का, मत टोरो चटकाय।
टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय"॥

अर्थ:

रहीम ने कहा कि प्यार का नाता नाजुक होता है, इसे मिलोडना उचित नहीं होता। अगर ये धागा राक बार टूट जाता है तो फिर इसे मिलाना मुश्किल होता है, और यदि मिल भी जाये तो टूटे हुए धागों के बीच गांठ पड जाती है।

क्या सीख मिलती है:

रहीम दास जी के इस दोहे से हमें यह सीख मिलती है कि हमें रिश्तों की कदर करनी चाहिए और राक-दूसरे के प्रति आदर-सम्मान का भाव रखना चाहिए क्योंकि अगर राकबार रिश्ता टूट जाता है तो फिर कितनी भी कोशिश क्यों न कर लें यह जोड़ा नहीं जा सकता है।

इस दोहे के माध्यम से हिन्दी साहित्य के महान कवि रहीम दास जी ने यह समझानें की कोशिश की हैं कि इंसान के गुणों की पहचान इंसान की वाणी से होती हैं।

दोहा : ५

"दोनों रहिमन एक से, जों लों बोलत नाहिं।
जान परत हैं काक पिक, रितु बसंत के माहिं"॥

अर्थ:

रहीम कहते हैं कि कौआ और कोयल रंग में एक समान काले होते हैं। जब तक उनकी आवाज ना सुनायी दे तब तक उनकी पहचान नहीं होती लेकिन जब बसंत ऋतु आता हैं तो कोयल की मधुर आवाज से दोनों में का अंतर स्पष्ट हो जाता हैं।

क्या सीख मिलती हैं:

रहीम अपने दोहें में कहते हैं कि किसी भी बडे व्यक्ति के गुणों और उसके स्वभाव का अंदाजा उसकी वाणी से लगा सकते हैं अर्थात हमें भी मधुर भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि मधुर आवाज सबको अपनी तरफ आकर्षित करती हैं और इससे हम अपने कई बिगडे कामों को भी कर सकते हैं। इस दोहे से हमे ये सीख मिलती हैं।

दोहा : 6

"तबहीं लो जीबो भलो दीबो होय न धीम।
जग में रहिबो कुचित गति उचित न होय रहीम"।।

अर्थ:

दानी को दान देने में आनन्द होता है। जीना भी तब अच्छा लगता है जबतक दान देने की क्षमता बनी रहे। बिना कुछ दान किये रहीम को जीना अच्छा नही लगता।

रहीम स्वयं दानी व परोपाकरी थे, उनका मानना था कि जो मनुष्य केवल अपने लिये जीता है दूसरों की मदद नहीं करता उसका जीवन व्यर्थ है।

दोहा : 7

"बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय ।।"

अर्थ:

कवि मानवीय संबंधों को एवं प्रेम को नाजुक बता कर पाठकों को समझाते हैं कि बात को बिगाडने से पेहले सम्भाल लेना चाहिए। दूध यदि फट जाये तो उसमे मक्खन नही निकाला जा सकता, वैसे ही लाख प्रयत्न करने पर भी सम्बन्ध पेहले जैसे नही हो सकते।

कई लोग रोसे होते हैं जो इंसान के नीच स्वभाव को जानते हुए भी उनसे दोस्ती कर लेते हैं या फिर किसी बात को लेकर झगड़ा कर लेते हैं। रहीम दास जी ने इस दोहे में रोसे ही लोगों के लिए बड़ी सीख दी है।

दोहा: 5

"रहिमन ओछे नरन सो, बैर भली न प्रीत।
काटे चाटे स्वान के, दोउ भाँती विपरीत॥"

अर्थ:

गिरे हुए लोगों से न तो दोस्ती अच्छी होती है, और न तो दुश्मनी। जैसे कुत्ता चाहे काटे या चाटे दोनों ही अच्छा नहीं होता।

क्या सीख मिलती है:

महाकवि रहीम दास जी के इस दोहे से हमें यह सीखने को मिलता है कि इंसान का स्वभाव को जानकर ही उससे दोस्ती करनी चाहिए क्योंकि गलत इंसान से दोस्ती और दुश्मनी दोनों ही खराब होती है।

दोहा : 8

"रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सो बार।
रहिमन फिर-फिर पोइए टूटे मुक्ता हार।।"

अर्थ:

रहीम कहते हैं कि मोती की माला के टूट जाने पर हम कीमती मोती फेक नहीं देते बल्कि उनको पिरो कर नई माला बना लेते हैं उसी तरह रिश्ते भी अनमोल होते हैं, हमें अपने स्वजनों को सौ बार रूठने पर भी मना लेना चाहिए।

दोहा : 9

"रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई कहा करै तरवारि।"

अर्थ:

रहीम कहते हैं कि बड़ों को देख कर छोटों को या कमजोर लोगों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए क्योंकि हर चीज का अपना महत्व होता है। फटे कपड़े को सिलने के लिए सुई ही उपयोग में लाई जाती है, तलवार नहीं।

रहीम के कविताये

ज्ञानीपण्डित
रहीम का दोहा
समय पाय फल होत है, समय पाय झरी जात।
सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछितात।

ज्ञानीपण्डित
कबीर दास के दोहे
बुरा जो देखन मैं चला,
बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना,
मुझसे बुरा न कोय।

रहीम के कवितायें

अति अनियारे मानों सान दै सुधारे
उत्तम जाति है बाहमनी
छबि आवन मोहनलाल की
जाति हुती सखि मोहन में
जिहि कारन बार न लाये कछू
कमल-दल नैननि की उनमानि
कौन धौं सिख 'रहीम' इहाँ
दीन चहै करतार जिन्हे सुख
पट चाहे तन पेट चाहत छदन मन
पुतरी अतुरीन कहूँ मिलि कै
बडेन सों जान पहिचान कै रहीम कहा
मोहबो निछोहबो सनेह में तो नयो नाहिं

रहीम के शुद्धविचार

रहीम के शुद्धविचार :-

1. मूर्खों से ना दोस्ती और ना ही दुश्मनी दोनों ही अच्छी नहीं होती जैसे कुत्ता चाहे काटे या चाटे दोनों का ही विपरीत प्रभाव माना जाता है।

2. वृक्ष कभी फल नहीं खाता, नदी कभी जल नहीं संचित करती ठीक उसी प्रकार सज्जन मनुष्य दूसरों की भलाई करने के लिए शरीर को धारण करते हैं।

3. प्रेम रुपी धागे को कभी नहीं तोड़ना चाहिए। यदि यह एक बार टूट जाता है तो फिर दोबारा नहीं जुड़ता है और जुड़ता भी है तो गांठ तो पड़ ही जाती है।

4. उचित समय आने पर वृक्ष में फल लगता है। झड़ने का समय आने पर झड़ जाता है। हमेशा किसी की अवस्था एक जैसी नहीं रहती इसलिए दुख के समय पछताना व्यर्थ है।

5. वह लोग धन्य हैं जिनका शरीर सदा सबका उपकार करता है।

6. जो इंसान किसी से कुछ मांगने के लिए जाता है वो तो मरे हुए हैं परंतु उनसे पहले ही वे लोग मर जाते हैं, जिनके मुंह से कुछ भी नहीं निकलता है।

7. यदि विपत्ति कुछ समय की हो तो वह भी ठीक है क्योंकि विपत्ति में ही सबके बारे में जाना जा सकता है कि दुनिया में कौन आपका साथ देता है और कौन नहीं?

8. दीपक के चरित्र जैसा ही पुत्र का भी चरित्र होता है। दोनों ही पहले तो उजाला करते हैं परन्तु बढ़ने के साथ-साथ अंधकार करते जाते हैं।

9. कुछ अवसर ऐसे आते हैं जब गुणवान को चुप रहना पड़ता है, उनका कोई आदर नहीं करता और गुणहीन वाचाल व्यक्तियों का ही बोल बाला हो जाता है।

10. जिन्हें कुछ भी नहीं चाहिए वो शासकों के शासक हैं, क्योंकि ना तो उन्हें किसी चीज की परवाह है, ना ही किसी बात का दुःख और उनका मन तो बिल्कुल आजाद है।

11. अपने मन के दुःख को मन के भीतर छुपा कर ही रखना चाहिए, दूसरों को दुख बताने से लोग आपका मजाक ज उड़ाते हैं। उसे बांटकर काम करने वाला कोई नहीं है।

12. पूरी दुनिया को पता है कि खैरियत, खून, खांसी खुशी, दुश्मनी, प्रेम और मदिरा का नशा छुपाए नहीं छुपता।

13. दूध को मथने से मक्खन नहीं निकलता।

14. बड़े को छोटा कहने पर बड़प्पन नहीं कम होता।

15. सज्जन व्यक्ति वह है जो दूसरों के भलाई के लिए संपत्ति संचित करते हैं।

16. बड़ों को क्षमा शोभा देती है और छोटों को बदमाशी।

17. बड़े लोगों को पाकर छोटे लोगों को नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि जहां छोटी सी सुई का काम होता है वहां तलवार बेचारी किस काम की है?

18. बड़ों को क्षमा शोभा देती है और छोटों को बदमाशी।

19. जिस प्रकार आंखों से आंसू बह कर मन का दुख प्रकट कर देता है, उसी प्रकार जिसे घर से भगाया जाता है वो घर का भेद दूसरों को बता ही देगा।

20. जैसे पृथ्वी ठंडी, गर्मी व बरसात सहन करती है उसी प्रकार मनुष्य का शरीर को भी सुख दुःख सहन करना चाहिए।

उपसंहार :-

रहीम सच्चे मायने में एक समन्वय की भावना रखने वाले कवि थे, जिन्होंने मानव के जीवन को समुन्नत बनाने के लिए जिन नीतिपरक दोहों का निर्माण आज से पाँच सौ साल पहले किया वो बातें आज भी समीचीन जान पड़ती हैं। उनका साहित्य युवाओं को मार्गदर्शन देने वाला कालजयी साहित्य है।

GOVERNMENT DEGREE COLLEGE FOR WOMEN, NALGONDA

DEPARTMENT OF HINDI

STUDENT PROJECT FOR 2019-20

TOPIC

RAMDHARI SINGH DINKAR KA RACHNA

S.NO	NAME OF THE STUDENT	ROLL NO	GROUP&YEAR
1	CH NAVYA	19044012405025	BCOM CA I YEAR
2	SAMEEDA FATIMA	19044012405083	BCOM CA I YEAR
3	SANA	19044012405084	BCOM CA I YEAR
4	B VASAVI	19044012405012	BCOM CA I YEAR
5	LUBNA AHMED	19044012111005	BA I YEAR

PROJECT WORK ABOUT RAMDARI SINGDINKAR

2019-2020

SNAME	GROUP	HALL TICKET NUMUBER
CH. NAVYA	B.com(CA) I year	1904401240 5025
SAMEEDA FATIMA	B.com(CA) I year	1904401240 5083
SANA	B.com(CA) I year	190 4401240 50 84
B.VASAVI	B.com(CA) I year	1904 4012 40 5012
LUBNA AHMED	BA(EPP) I year	190 440 1211 1005

परिचय

रामधारी सिंह दिनकर एक भारतीय हिंदी कवि, निबंधकार और चिकित्सक थे, जिन्हे सबसे महत्वपूर्ण अधुनिक हिंदी कवियों में से एक माना जाता है। दिनकर राष्ट्रवादी कवियों में राष्ट्रवादी कविता के साथ एक विद्रोही कवि के रूप में उभरे। उनकी कविता ने वीर रस को उकसाया, और राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ाने वाली प्रेरणादायक देशभक्तिपूर्ण रचना के कारण उन्हे राष्ट्रकवि के रूप में सम्मान दिया गया।

दिनकर ने शुरू में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारी आंदोलन का समर्थन किया लेकिन बाद में गाँधीवाद बन गये।

प्रारंभिक जिवन

दिनकर बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव में 27 सितम्बर 1908 एक गरीब भूमिहार ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ थे! एक छात्र के रूप में, दिनकर के पसंदीदा विषय इतिहास, राजनीति और दर्शनशास्त्र थे! उन्होंने हिंदी, संस्कृत, मैथिली, बंगाली, उर्दू और अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया!

दिनकर इकबाल, रवींद्रनाथ टैगोर, कीट्स और मिल्टन से काफी प्रभावित हुआ थे! उन्होंने बंगाली से हिंदी में रवींद्रनाथ टैगोर के कार्यों का अनुवाद भी कीया था!

शिक्षा

बी. ए परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक हो गये! बिहार की सरकार में सेवा में सब-रजिस्टार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक पदों पर कार्य किया। मुजफ्फरपूर कलॉज में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे. आगलपूर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर कार्य किया और उसके बाद भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार बने!

उन्हें "पद्म विभूषण" की उपाधि से सभी अलंकृत किया गया! उनकी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उर्वशी के लिये "भारतीय ज्ञानपीठ" पुरस्कार प्रदान किया गया! अपनी लेखनी के माध्यम से वह सदा अमर रहेंगे!

साहित्यिक कार्य

श्री रामधारी सिंह दिनकर जिसे राष्ट्रकवि कहा जाता है, उन्होंने अपनी प्रेरक देशभक्तिपूर्ण रचना के कारण राष्ट्रवादी भावना पैदा की! दार्शनिक कवि, श्री दिनकर ने हिंदी साहित्यकारों में लौकिक 'सूर्य' की तरह बढोतरी की!

कार्य उनके काम ज्यादातर 'वीर रस' में है! जाहिर है, उर्वशी एक अपवाद है! उनकी सबसे बडी कृतियां है - 'रश्मिरथी' और 'परशुराम की प्रतिज्ञा'! भूषण के बाद से उन्हें 'वीर रस' का सबसे बडा हिंदी कवि माना गया है!

द्वापर युग की ऐतिहासिक घटना **महाभारत** पर आधारित उनके प्रबन्ध काव्य **कुरुक्षेत्र** को विश्व सर्वश्रेष्ठ काव्यों में स्थान दिया गया!

1952 में देश भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ तो उन्हें **राज्य सभा** का सदस्य चुना गया और वह दिल्ली आगए! दिनकर 12 वर्ष तक संसद सदस्य रहे, बाद में उन्हें सन 1964 से 1965 ई. तक भागलपुर विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया! लेकिन अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें 1965 से 1971 ई तक अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त किया और वह फिर दिल्ली लौट आए! फिर तो ज्वार उभरा और रेणुका **हुंकार, रसवंती, द्वंदगीत** रचे गए!

रेणुका और हुंकार की कुछ रचनाएँ वहाँ-वहाँ प्रकाश में आईं और अंग्रेज प्रशासकों को समझते देर न लगी कि वे एक गलत आदमी को अपने तंत्र का अंग बना बैठे हैं! और दिनकर की फाइल तैयार होने लगी. बात बात पर कैफियत तलब होती और चेतावनियाँ मिला करती! चार वर्ष में बाईस बार उनका तबादला किया गया!

स्वभाव

रामधारी सिंह दिनकर स्वभाव से सौम्य और मृदुभाषी थे, लेकिन जब बात देश के हित-अहित की आती थी तो वह बेबाक टिप्पणी करने से कतराते नहीं थे! रामधारी सिंह दिनकर ने ये तीन पंक्तियां पंडित जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ संसद में सुनाई थी, जिससे देश में

हूचल मच गया। दिलचस्प बात यह है कि राज्यसभा सदस्य के तौर पर दिनकर का चुनाव पंडित नेहरू ने ही किया था, इसके बावजूद नेहरू की नीतियों की मुखालफत करने से वे नहीं चूके।

देश में देवता सदृश्य लगता है
बंद कमरे में बैठकर गलत हुक्म लिखता है।
जिस पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा हो
समझो उसी ने हमें मारा है।

1962 में चीन से हार के बाद संसद में दिनकर ने इस कविता का पाठ किया जिससे तत्कालिन प्रधान मंत्रि नेहरू का सिर झूक गया था। यह घटना आज भी भारतीय राजनीति के इतिहास की प्रासिकारि घटनाओं में से एक है।

रे रोक युधिष्ठिर को न यहां जाने दे उनको स्वर्गधीर
फिरा दे हमें गांडीव गदा लौटा दे अर्जुन भीम वीर

इसी प्रकार एक बार तो उन्होंने भरी राज्यसभा में नेहरू की ओर इशारा करते हुए कहा "क्या आपने हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए बनाया है, ताकि सोलह करोड़ हिंदीभाषियों को रोज अपशब्द सुनाए जा सकें?" यह सुनकर नेहरू सहित सभा में बैठे सभी लोग सन्न रह गए थे! किस्सा 20 जून 1962 का है! उस दिन दिनकर राज्यसभा में खड़े हुए और हिंदी के अपमान को लेकर बहुत सख्त स्वर में बोले! उन्होंने कहा -

देश में जब भी हिंदी को लेकर कोई बात होती है, तो देश के नेतागण ही नहीं बल्कि कथित बुद्धिजीवी भी हिंदी वालों को अपशब्द कहे बिना आगे नहीं बढ़ते! पता नहीं इस परिपाटी का आरंभ किसने किया है, लेकिन मेरा ख्याल है कि इस परिपाटी को प्रेरणा

प्रधानमंत्री से मिली है। पता नहीं तेरह भाषाओं की क्या किस्मत है कि प्रधानमंत्री ने उनके बारे में कभी कुछ नहीं कहा, किन्तु हिंदी के बारे में उन्होंने आज तक कोई अच्छी बात नहीं कही! मैं और मेरा देश पूछना चाहते हैं कि क्या आपने हिंदी को राष्ट्रभाषा इसलिए बनाया था ताकि सोलह करोड़ हिंदीभाषियों को रोज अपशब्द सुनाए? क्या आपको पता भी है कि इसका दुष्परिणाम कितना भयावह होगा?

यह सुनकर पूरी सभा सन्न रह गई। ठसाठस भरी सभा में गहरा सन्नाटा छा गया! यह मुर्दा-चुप्पी तोड़ते हुए दिनकर ने फिर कहा - मैं इस सभा और खासकर प्रधानमंत्री नेहरू से कहना चाहता हूं कि हिंदी की निंदा करना बंद किया जाए! हिंदी कि निंदा से इस देश की आत्मा को गहरी चोट पहुंचती है!

कुरुक्षेत्र में उन्होंने स्वीकार किया कि युद्ध विनाशकारि था, लेकिन उन्होंने कहा है कि स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यह अवश्य था!

दिनकर तीन बार राज्य सभा के चुने गए!

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा

"दिनकर जी अहिंदी बीच हिंदी के सभी कवियों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय थे और मातृभाषा से प्रेम करने वालों के प्रतिक थे!"

हरिवंश राय बच्चन ने कहा!

"दिनकर जी को नहीं, बल्कि गद्य, पद्य, भाषा और हिंदी अलग-अलग चार ज्ञानपीठ पुरस्कार दिये जाने चाहिए!

प्रमुख गद्य कार्य

* मिट्टी की ओर .
* चित्तौर का साका
* अर्धनारीश्वर
* रेती की फूल
* हमारी सांस्कृतिक एकता
* भारत की सांस्कृतिक कहानी
* राज्यभाषा और राष्ट्रीय एकता
* उजली आग
* संस्कृति के चार अध्याय
* काव्य की भूमिका
* वेणु वन

अनुक्रमणिका

* श्री अरविंदो:
मेरी दृष्टि में, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

* पंडित नेहरू और और अन्य महापुरुष
लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

* प्रेमांजली,
लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली

कविता

* दिनकर की सूक्तियां
* दिनकर के गीत
* संचयिता
* रश्मिलोक
* उर्वशी तथा अन्य श्रृंगारिक कविताएं
* अमृत मंथन
* भाजन वीना
* सपनों का धूल
* समानांतर
* रश्मिमाला

रचना

* प्रणभंग।
* रेणुका
* हुंकार
* रसवंती
* द्वंदगीत
* कुरुक्षेत्र
* धूप छांव
* सामधेनी
* बापू
* इतिहास के आँसू
* धुप और धूल
* रश्मिरथी
* दिल्ली
* नीम के पत्ते

सम्मान, पुरस्कार

* साहित्य अकादमी
* पद्म विभूषण
* भागलपुर विश्वविद्यालय कुलाधिपति
* जाकिर हुसैन डॉक्टरेट
* विद्या वाचस्पति
* विद्यापीठ साहित्य चूड़ामणि
* ज्ञानपीठ (उर्वशी)

परियोजना कार्य

2020 - 21

Arfiya Naaz (MPcs 2nd Year) 19044012468014

Hooria Iram (MZC 2nd Year) 19044012457007

Amatun Noor Naila (MPcs 2nd Year) 19044012468010

Sana Begum (BZC 2nd Year) 19044012445203

Adeena fathema (BA 2nd Year) 19044012111001.

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 1964 में दौलतपुर, रायबरेली में हुआ। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य में एक नवीन युग के प्रवर्तक थे जिसे उनके नाम पर द्विवेदी युग की संज्ञा दी गई है। सरस्वती पत्रिका का सम्पादन करते हुए उन्होंने हिन्दी की महान सेवा की और हिन्दी को अनेक नए कवि और निबन्धकार प्रदान किए। हिन्दी भाषा को सुव्यवस्थित करने और उसका व्याकरण। सम्मत स्वरूप निर्धारित करने में उनकी विशेष भूमिका रही है। हिंदी गद्य में छाई हुई अराजकता को दूर करने में भी द्विवेदी जी ने अपना योगदान दिया। ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली हिन्दी को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी द्विवेदी जी को प्राप्त है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के पिता का नाम पं. रामसहाय द्विवेदी था। परिवार की कमजोर आर्थिक

[illegible]

… की अच्छी [illegible] बड़ी नौकरी छोड़ दी और वहाँ से त्यागपत्र [illegible] 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादन का भार [illegible] में सम्भाल लिया। अपनी अद्भुत प्रतिभा, साहित्यिक सूझबूझ, परिश्रमशीलता एवं सम्पादकीय कुशलता से उन्होंने इस पत्रिका को हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका बना दिया।

द्विवेदी जी ने एक ओर तो हिन्दी भाषा का परिष्कार एवं परिमार्जन किया दूसरी ओर उसे व्याकरण [illegible] किया। कवियों और लेखकों [illegible]

[illegible] कवियों
[illegible] की [illegible]
[illegible] प्रकार
[illegible] की [illegible] की । इस
[illegible] का [illegible] हुआ
[illegible]

[illegible] की प्रकार [illegible] है ।
[illegible] के बहुत [illegible]
[illegible] प्रकार का प्रयोग है जो
[illegible] प्रकार दिखाई
[illegible] है । [illegible] पर
[illegible] के प्रयोग से प्रकार को
[illegible] प्राप्त की है ।
[illegible] प्रकार का प्रयोग करके
[illegible] के प्रकार से
[illegible] के [illegible]
[illegible]
[illegible] हुए हैं ।

द्विवेदी जी ने भाषा संस्कार, व्याकरण शुद्धता और विराम चिन्हों के प्रयोग पर बल देकर हिंदी को परिनिष्ठित रूप प्रदान किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसकी प्रशंसा की, खड़ीबोली के पद्य पर द्विवेदी जी का पूरा-पूरा असर पड़ा। बहुत से कवियों की भाषा शिथिल और अव्यवस्थित होती थी। द्विवेदी जी ऐसे कवियों की भेजी हुई कविताओं की भाषा आदि दुरुस्त करके सरस्वती में छापा करते थे। इस प्रकार कवियों की भाषा साफ होती गई और द्विवेदी जी के अनुकरण में अन्य लेखक भी शुद्ध भाषा लिखने लगे। द्विवेदी जी की हिंदी साहित्य में भूमिका एक सर्जक के रूप में उतना नहीं है जितना कि विचारक, दिशा निर्देशक, चिंतक एवं नियामक के रूप में।

इस युग में प्रकृति को काव्य-विषय के रूप में पहली बार महत्त्वपूर्ण स्थान मिला। इसके पूर्व प्रकृति या तो उद्दीपन के रूप में आती थी या फिर अप्रस्तुत विधान का अंग बनकर। वहीं इस युग में प्रकृति को आलंबन तथा प्रस्तुत विधान के रूप में मान्यता मिली। द्विवेदी युग में प्रकृति का गतिशील चित्रण न होकर स्थिर चित्रण हुआ है।

इस युग में अधिकतर कवियों ने द्विवेदी जी के दिशा-निर्देश के अनुसार काव्य रचना कर रहे थे। किन्तु कुछ कवि ऐसे भी थे जो उनके अनुशासन में नहीं थे और स्वच्छंद काव्य सृजन कर रहे थे। इस प्रकार द्विवेदी युग में दो धारा उभर कर सामने आती है- द्विवेदी मंडल के कवि और द्विवेदी मंडल के बाहर के कवि।

... ... के कवियों की काव्य धारा को 'अनुराग...
... ... गया द्विवेदी मंडल के बाहर के कवियों
... ... स्वच्छंदता की धारा कहा गया।

आधुनिक कविता के दूसरे पड़ाव (सन् 1903 से
... को द्विवेदी-युग के नाम से जाना जाता है।
डॉ. नगेन्द्र ने द्विवेदी युग को 'जागरण-सुधार काल'
से कहा जाता है और इसकी समयावधि 1900
से 1918 ई. तक माना। वहीं आचार्य रामचन्द्र
शुक्ल ने द्विवेदी युग को 'नई धारा: द्वितीय
उत्थान' के अन्तर्गत रखा है तथा समयावधि
सन् 1893 से 1918 ई. तक माना है। यह
आधुनिक के उत्थान व विकास का काल है।
सन् 1903 ई. में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी
'सरस्वती' पत्रिका के संपादक बने, संपादक
बनने के बाद द्विवेदी जी हिंदी भाषा के
परिष्कार पर विशेष ध्यान दिया।

...ने सरस्वती के माध्यम से कवियों पर
...ता लिखने के लिए प्रेरित किया तथा
...भाषा के स्थान पर काव्यभाषा के रूप में
...खड़ीबोली का प्रयोग करने का सुझाव दिया
...ताकि गद्य और काव्य की भाषा में
...एकरूपता आ सके।

द्विवेदी जी ने पचास से अधिक ग्रन्थों की
...ना की जो विविध विषयों से सम्बन्धित हैं।

काव्य संग्रह :- 1) काव्य मंजूषा 2) कविता कलाप,
3. सुमन।

आलोचना :- 1) रसज्ञ रंजन 2) हिन्दी नवरत्न
... साहित्य सीकर 4) नाट्यशास्त्र, 5) विचार - विमर्श

अनूदित रचनाएं :- 1) बेकन विचारमाला 2) मेघदूत
... विचार रत्नावली 4) कुमारसम्भव 5) गंगालहरी

निबन्ध :- सरस्वती पत्रिका में तथा अन्य
अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित।

द्विवेदी युग की प्रवृत्तियाँ :

राष्ट्रीय - भावना या भारत - प्रेम : इस समय भारत की राजनीति में एक महान परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रयास तेज और बलवान हो गए। भारतेंदु युग में जागृत राष्ट्रीय चेतना क्रियात्मक रूप धारण करने लगी। इसका व्यापक प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा और कवि समाज राष्ट्र - प्रेम का वैतालिक बनकर राष्ट्र - प्रेम के गीत गाने लगा।

जय जय प्यारा भारत देश
--- श्रीधर पाठक

संदेश नहीं मैं यहां स्वर्ग लाया
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने
आया --- मैथिलीशरण गुप्त.

लोक - प्रचलित पौराणिक आख्यानों, इतिहास वृत्तों और देश की राजनीतिक घटनाओं में इन्होंने अपने काव्य की विषय वस्तु को अपनाया। इन आख्यानों, वृत्तों और घटनाओं के चयन में शोषितों के प्रति सहानुभूति, देशानुराग और शासन के प्रति विद्रोह का स्वर मुखर है।

[illegible] इस लेख में कबीर रचनाओं के [illegible] है। [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] है।

एक बूँद पानी
पहुँचे समुद्र मिलाकर
देखाई।

कोटि [illegible] [illegible] [illegible]
हुआ है [illegible] आई॥

[illegible] का मूल्यांकन इस युग के कवियों ने [illegible] भी किया। इनकी [illegible] में—

[illegible] मानवता को गुरुत्व की
[illegible] भी कह सकता हूँ
[illegible] को ईश्वरता प्राप्त कराने
आया॥

सामाजिक चेतना : पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव एवं जन आन्दोलनों के कारण इस काल के कवि में बौद्धिक जागरण हुआ और वह सांस्कृतिक भावनाओं के मूल सिद्धांतों को प्रकाशित कर बाहरी आडम्बरों का विरोध करने लगा। स्त्री-शिक्षा, बालविवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, दहेज-प्रथा, आदी विषयों पर द्विवेदी युग के कवियों ने रचनाएं लिखी हैं। कवियों ने समाज की सर्वांगी उन्नति को लक्ष्य बनाकर इन सभी विषयों पर अपने विचार व्यक्त किया है।

हे ईश, दयामय, इस देश को
उबारो।
दूषित कुरीतियों के वश से
इसे उबारो॥
अनाथ राज निर्दय समाज से
होकर जूझो।

इस युग के कवियों की धार्मिक चेतना भी उदार और व्यापक हुई। धार्मिक भावना केवल ईश्वर के गुण-गान तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसमें मानवता के आदर्शों की प्रतिष्ठा है। विश्व-प्रेम तथा जनसेवा की भावना इस युग की धार्मिक चेतना का मुख्य अंग है।

Students Study Project

1st Year (2021)

Topic : सुशीला टाकभौरे का रचना संसार।

Amatun Noor Sofiya
20044012445009
(B.Z.C)

Shaista Naaz.
20044012405105
(B.com)

Areefunnisa Begum
20044012129002
(B.A)

Vaishnavi Patil
20044012457022.
(M.Z.C)

Zareena
20044012405120
(B.com.)

⇒ परिचय :

नाम : सुशीला टाकभौरे

जन्म : 4 मार्च 1954

जन्म स्थान : ग्राम : बानापुर, जिला : होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

- सुशीला जी हिंदी दलित साहित्य की अग्रणी महिला साहित्य से एक हैं। उनके जीवन के अनुभव, एक दलित और स्त्री होने के नाते उनके जीवन का संघर्ष उनकी रचनाओं में भली-भाँति परिलक्षित होती हैं।

- एक कहानीकार तथा एक कवियत्री के रूप में उन्होंन अपनी अलग छाप स्थापित की है। सुशीला जी का प्रारम्भिक जीवन बहुत ही संघर्षमय रहा है। वे "वाल्मीकि" समाज से आती हैं। इस सामाजिक विसंगति का दंश उन्होंने भी बचपन से ही झेला है।

- उन्हें अन्य बच्चों के साथ खाने-पीने की छूट नहीं थी। [illegible] र स्कूल से वापस आते हुए रिक्शेवाले [illegible] मना कर देते। सो वे पैदल ही हुए [illegible] उन्हें बिठाने से मना कर देते।

वर्ष 1944 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के "पश्चात हाई स्कूल" में शिक्षक के रूप में कार्यरत के रूप में कार्यरत श्री सुन्दर लाल जी से हो गया।

इसके उपरांत की शिक्षा में उनके पति का भी उन्हीं काफी सहयोग मिला।

शिक्षा के लिए संघर्ष;

सुशीला जी को बचपन से ही शिक्षा से लगाव था। के माता पिता ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे। पिता को अक्षरज्ञान - भाषाज्ञान मात्र था।

माता जी भी अनपढ़ थी। अतः कहा जा सकता है की ो शिक्षा में काफी सहयोग रहा। उनकी दोनों बड़ी बहने ः दूसरी और चौथी कक्षा तक ही पढ़ पायी थी। अतः जा सकता है कि उनके परिवार में शिक्षा में काफी ोग रहा।

न्हीं के अनुरोध पर पिता तथा भाइयों ने सुशीला प्रशिक्षण कॉलेज में करवाया था।

ा के प्रति सुशीला जी कि का एक वाकया है। न वे जिस समाज से आती हैं, इसमें उस काल में । में ही लड़कियों का विवाह कर दिया जाता जिसके

लिए परिवार और समाज दोनों का काफी दबाव हुआ करता था। अतः सामाजिक रीतिरिवाजो के मद्देनजर तथा गरीबी के कारण परिवार द्वारा उनकी शिक्षा को रोक कर विवाह का निर्णय लिया गया। इस समय एक तक सुशीला जी की मात्र 11वीं कक्षा तक की पढ़ाई पुर्ण हो सकी थी।

सुशीला जी ने इस बात से नाराज का होकर भुख-हड़ताल कर दिया। तीन दिनों तक उन्होनें आनाज का एक दाना तक नही खाया।

मात्र पान्नी पीकर तीन दिन निकल दिए। बाद में तबीयत बिगड़ने पर उनका एडमिशन करवाया गया। इसके उपरांत उन्होंने अपना भुख-हड़ताल तोड़ा।

उनकी प्राथमिक शिक्षा बानापूर के ही गंज "प्राथमिक में हुथी। कुसूम "महाविद्यालय", सिवनी, मालव से उन्होंने वर्ष 1974 में बी.ए. की डिग्री हासील की

1976 में उन्होनें नागपूर विश्वविद्यालय से बी.एड डिग्री हासिल की। "प्रकाश हाई स्कुल" में ही साक्षात्कार के जारिये उनका चयन अध्यापिका के रूप में हो गया ...होंने 1986 तक अध्यापन का कार्य किया।

...सके उपरांत 1986 में उन्होंने एम.ए. और

स्रोत है जिसमें दलित प्रहार, सामाजिक असमानता तथा जातिगत व्यवस्था के उन्मूलन की वकालत की गयी है।

सुशीला जी की आत्मकथा तथा "शिकंजे का दर्द" वर्ष 2011 में प्रकाशित हुयी। इसके माध्यम से उन्होंने अपने जीवन के संघर्ष और कटु अनुभवों को साझा किया है।

उनकी कई रचनाओं को विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

⇨ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल रचनाएँ:

1. शिकंजे का दर्द — 1. नार्थ महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी
2. मुंबई यूनिवर्सिटी

2. नंगा सत्य — 1. जवाहरलाल यूनिवर्सिटी

3. संघर्ष — 1. गोवा यूनिवर्सिटी में एम.ए. के सिलेबस में सम्मिलित
2. नागपुर यूनिवर्सिटी में बी.ए. के सिलेबस में सम्मिलित

4. टूटता वहम — 1. शोलापुर यूनिवर्सिटी के सिलेबस में सम्मिलित

5. अनुभूति के घेरे — 1. गुजरात यूनिवर्सिटी (Gujarat university) में एम.ए. के सिलेबस में सम्मिलित।

...लॉजि(ग) के एम.ए. के सिलेबस में सम्मिलित

४. रंगा और कांडगा

1. "मगांधि जीवन" - महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी के सिलेबस में सम्मिलित

५. सिलिया

1. हैदराबाद यूनिवर्सिटी के सिलेबस में सम्मिलित में
2. इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी के सिलेबस में सम्मिलित।
3. कर्णाटक बोर्ड के सिलेबस में सम्मिलित
4. महाराष्ट्र बोर्ड "लोकभारती" सिलेबस में सम्मिलित
5. अहमदनगर और औरंगाबाद यूनिवर्सिटी के बी.ए. तथा एम.ए. के सिलेबस में सम्मिलित।

नीला आकाश (2013), तुम्हे बदलना ही होगा (2015), वह लड़की (2018) आदि सुशीला जी के उपन्यासों है।

कहानी संग्रह :

अनुभुति के घेरे (1977), दहता वहम (1977), संघर्ष (2006), जरा समझो (2014) आदि सुशीला जी के कहानी संग्रह है।

* रंग और व्यंग्य (2006) और नंगा सत्य (2007) उनकी प्रसिद्ध नाटक है। शिकंजे का दर्द (2011) उनका आत्मकथा है।

उपलब्धियाँ :

म.प्र. दलित साहित्य अकादमी विशिष्ट सेवा सम्मान। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा (मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह हाथों)

सावित्री बाई फुले सम्मान

रमापिका फाउण्डेशन द्वारा। डॉ. उषा मेहता हिन्दी सेवा सम्मान। महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा

काव्य संग्रह :

"स्वाति बुंद और खारे मोती (1993)"

यह सुशीला जी का पहला काव्य संग्रह है।

प्रतिशोध इसका मुख्य विषय।

⑧ "यह तुम भी जानो। (1994)"
दलित और नारीवादी काव्यों का संकलन

⑧ "हमारे हिस्से का सूरज (2005)"
दलितों के अतीत और वर्तमान पर आधारित

⇨ सुशीला टाकभौरे जी का व्यक्तित्व :

सुशीला टाकभौरे एक दलित महिला लेखिका है। एकतो दलित ऊपर से महिला। उनका दर्द भली भाँति समझा जा सकता है। उन्होंने अध्यापन के साथ-साथ कई समाज-सेवी संस्थाओं के साथ भी काम किया है।

लेखिका डॉ. अम्बेडकर को आपने मार्गदर्शक के रूप में ज्ञान का सूरज मानती है। सुशीला जी का मानना है कि मनुवादियों की जीवन शैली में दलित समाज का विकास कभी भी सम्भव नहीं।

सुशीला जी मुर्ति पूजा का खंडना करती है। वह उन परम्पराओं को स्वीकार नहीं करना चाहती जो एक स्त्री को मानना है कि स्त्री का मार्ग प्रशस्त करती है। सुशीला जी मानना है कि स्त्री का अस्तित्व स्वतन्त्र को दुःखान करा देती है। लेखिका शोषक समाज से कभी भी दलितों के भले की उम्मीद नहीं करती।

⇨ दलितों की सामाजिक चेतना का वर्णन :

> सुशीला टाकभौरे जी के "संघर्ष" कहानी संग्रह में दलितों की दयनीय सामाजिक स्थिति का वर्णन किया गया है। समाज की बनावट के आरम्भ में ही वर्ण भेद अथवा जाति भेद का प्रचलन आरम्भ हो चुका था। "संघर्ष" कहानी में शंकर नामक बाल पात्र को कोई भी शरारत करने पर गांव के लोगों से जो गालियां सुननी पड़ती थी। वे गालियां जाति को निशाना बनाकर से आम तोड़ लिए। और बहुत डांट पड़ी।

> "जन्मदिन" कहानी में लेखिका ने बताया है कि जाति व्यवस्था में अछूत माने गए दलित भंगियों को भी बस्तियों से बाहर बसाया गया है। इनके मोहल्लों के आसपास स्वर्ण जाति के हार नहीं है।

• इस कहानी में वर्णन है कि दलितों को समाज में मैल सफाई का काम दिया जाता है। वे लोग मोहल्लों के आसपास स्वर्ण जाति है हर की कच्ची संडासो की सफाई करके मल मुत्र से बड़े-बड़े डले या टोकन भरते है।

• जन्मदिन कहानी में मुन्ना ने सहानुभूति के साथ कहा बेचारा गौरे लाल, कैसे उठाता होगा मलमुत्र के टोकने। फि प्रेम ने हंसकर कहा - मुत्र के भारी टोकने अपने पर उठाता है। टोकने उठाते समय गंदगी हाथी पैर और पर लग जाती है तो भी क्या करें। काम ही ऐसे है।

› "छिलिया" कहानी में जब खेल-कूद की प्रतियोगिता के दौरान छिलिया को अपनी सहेली हेमलता के साथ उसकी बहन के ससुराल में कुछ देर आराम करने के लिए जाना पड़ता है तो उसकी बहन की सास ने हेमलता को पानी का गिलास दिया। दूसरा गिलास हाथ में लेकर वह छिलिया के बारे में पूछने लगी- कौन है? किसकी बेटी है? कौन ठाकुर है?

. मौसी जी ने हेमलता से छिलिया की जाती पुछी। हेमलता ने धीरे से बता दीया। मौसी जी जाती का नाम सुनकर चौंक गयी। तब मौसी जी ने अतिरिक्त प्रेम जताते हुए कहा- "कोई बात नहीं बेटी, हमारा भैया तुम्हें साइकिल पर बिठाके वहां छोड़ आएगा। -

• मौसी जानती थी की छिलिया पर को प्यास लगी है, फिर भी जाति का नाम सुनकर वह पानी मांगने की हिम्मत नहीं कर सकी।

› "बदला" कहानी में मुख्य पात्र कल्लू जो की एक छात्र है और खेल-खेल में उच्च वर्ण के सहपाठियों से झगड़ा हो जाने पर उन सहपाठियों के परिवार वाले उसके घर पर आकर उसकी नानी से कहते है।

छोओ डोकरी, अपने नाती को बाहर निकाल। हम उ उसका भुर्ता बना देंगे। हमारे लड़कों पर हाथ उठाने की

क्या तुम अपनी जात और औकात भूल गये ....?

• "झोंगा माँ" कहानी में झोंगा माँ दलित जाति से सम्बन्धित एक बार वह गांव से बाहर गई हुई थी। गांव वालों के द्वारा जबरदस्ती इसकी लड़की ने बहुत कहा कि उसे दाईपने का काम नहीं मालूम। परन्तु गांव वालों को विश्वास था कि दाई माँ नहीं तो उनकी बेटी को बात नहीं मालूम।

. परन्तु गांव वालों को विश्वास था के दाई माँ नहीं तो उनकी बेटी ही यह काम संभालेगी। बस, फिर तो वे तुलसा पड़ेगा। दाई आज तो ये काम तुझे ही संभालना पड़ेगा।

. वे लोग गुस्से से तुलसा को डांटने लगे और अपना धक्का बताने लगे। ऐसे कैसे जायेगी ... चलना पड़ेगा। दाई की बेटी को दाईपना नहीं मालूम ...। ऐसा कैसे हो सकता है।

• "नई राह की खोज" कहानी के माध्यम से लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज के इस पिछड़े वर्ग वैसे भी पैतृक रोजगार के बदले कोई दूसरा रोजगार अपनाने की बात नहीं सोची जा सकती। ऐसा ही कहानी के पात्र लालचन्द के साथ भी हुआ।

. घर में पढ़ाई का माहौल न होने के कारण के आर्थिक तंगी के कारण लालू सभी विषयों में पीछे था। लालू पढ़ाई का हाल देखकर शिक्षक उसे पीटने लगे तथा स्कूल से भागने लगा।

क्या तुम अपनी जात और औकात भुल गये....?

› "छौआ माँ" कहानी में छौआ माँ दलित जाति से सम्बन्धित एक बार वह गांव से बाहर गई हुई थी। गांव वालों के द्वारा जबरदस्ती उसकी लड़की ने बहुत कहा कि उसे दाईपने का भाक नहीं मालुम। परन्तु गांव वालों को विश्वास था कि दाई माँ नहीं तो उनकी बेटी को बात नहीं मालुम।

· परन्तु गांव वालों को विश्वास था के दाई माँ नहीं तो उनकी बेटी ही यह काम संभालेगी। बस, फिर तो वे तुलसा पड़ेगा। दाई आज तो ये काम तुझे ही संभालना पड़ेगा।

· वे लोग गुस्से से तुलसा को डांटने लगे और अपना दबका बनाने लगे। ऐसे कैसे जायेगी ... चलना पड़ेगा। दाई की बेटी को दाईपना नहीं मालुम ... । ऐसा कैसे हो सकता है।

› "नई राह की खोज" कहानी के माध्यम से लेखिका ने यह भी दिखाने का प्रयास किया है कि समाज के इस पिछड़े वर्ग में वैसे भी पैतृक रोजगार के बदले कोई दूसरा रोजगार अपनाने की बात नहीं सोची जा सकती। ऐसा ही कहानी के पात्र लालचन्द के साथ भी हुआ।

· घर में पढ़ाई का माहौल न होने के कारण के आर्थिक तंगी के कारण लालू सभी विषयों में पीछे था। लालू की पढाई का हाल देखकर शिक्षक उसे पीटने लगे तथा लालू स्कूल से भागने लगा।

... चली ही गई।
आखिर हुआ वही, एक दिन सफाई मजदूरें की लिस्ट में लालु का नाम भी आ गया। लालु अब विचार करने लगा- क्या जिंदगी इसी तरह बार-बार दोहराई जाती रहेगी?

. आखिर हुआ वही, एक दिन सफाई मजदूरों की लिस्ट में लालु का नाम भी आगया। लालु अब विचार करने लगा- क्या जैसा कि वह आ गया है। ऐसा कब तक चलेगा? कहीं न कहीं और कभी न कभी इस परम्परा को तोड़ना ही पड़ेगा।.

• "दमदार" कहानी में भी जग्गु पहलवान द्वारा पागल गरीब औरत पर किये गए अत्याचार व मारपीट को दर्शाया गया है एक दिन दुर्भाग्य से पागल औरत के सामने से जायेगा? जैसा कि वह से जग्गु पहलवान निकला। पागल औरत ने जग्गु को बंदर की तरह दाँत दिखाये।

• जग्गू ने पागल औरत के बाल पकड़ लिये। जग्गू ने उसे घसीटना शुरू कर दिया और लात जूतों से उसे पीटा। असहाय गरीब पागल औरत के लिये सबके मन में सहानुभूति थी।

. कुछ लोगों ने जग्गू पहलवान को समझाना की कोशिश थी। कुछ लोगों ने जग्गु पहलवान को समझाने की कोशिश की।

› डॉ. सुशीला टाकभौरे जी भी चाहती है कि दलित एवं शोषित वर्ग तक अम्बेडकरवादी विचारों का संदेश पहुंचे, वे भी जागृति, प्रगति और परिवर्तन के साथ समता-सम्मान का जीवन जीयें, अपना वर्तमान अच्छा बनाकर आने वाली पीढ़ियों के वर्तमान और भविष्य के लिये विचार करें।

⇒ अन्य पुस्तकें :

"संवादों के सफ़र" (2017)

यह पुस्तक वर्ष १९९३ से २०१७ के बीच भिन्न कथाकारों, समाज सेवी आदि द्वारा लिखित पत्रों का संकलन है जो दलित तथा नारी मुक्ति आंदोलनों से सम्बद्ध हों।

"कैदी नं 307":

"सुधीर शर्मा के पत्र" (2017)

यह पुस्तक गोवा जेल के कैदी सुधीर शर्मा तथा सुशीला टाकभौरे के मध्य पत्राचारों का संकलन है।

"मेरे साक्षात्कार" (2015)

सुशीला जी के साक्षात्कारों का संकलन।